केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

२ अक्तूबर २०१२ & २ जनवरी २०१३, वर्ष १८&१९, नं ६१&६२, लक्ष्मीनगर, D-1, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम - ६९५ ००४

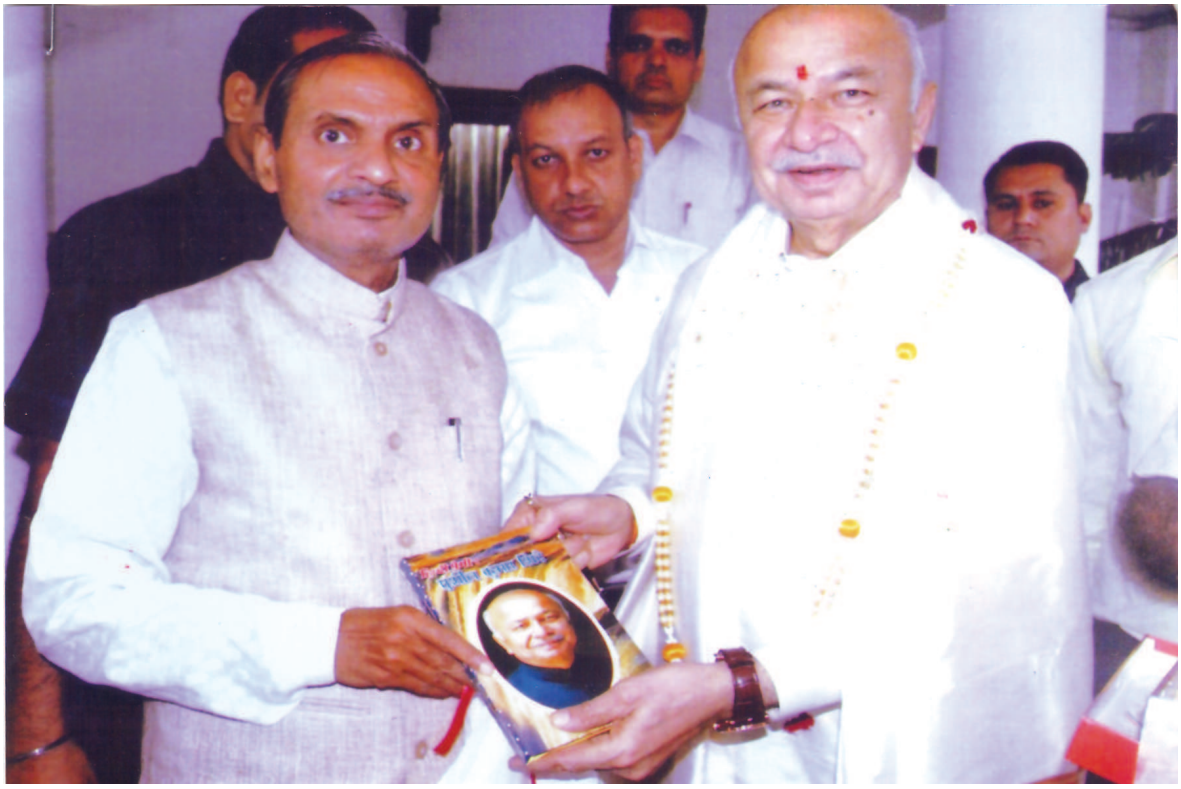

हिन्दी प्रेमी सुशीलकुमार शिंडे नामक ग्रंथ लेखक डॉ.हरिहरलाल श्रीवास्तव से स्वीकार करते हैं, एक सभा में, दिल्ली की।

वैलोप्पिल्ली सांस्कृतिक भवन में माननीय मंत्री श्री.के .सी.जोसफ जी डॉ.एन.चन्द्रशेखरन जी को पुरस्कार सम्मान प्रदान करते हैं।

डॉ.नायरजी के नवति आदर के सिलसिले में यवनिका स्कूल प्रतिस्पर्धा में विजयी निर्मला स्कूल को डॉ.नायर रोलिंग ट्रोफी देते हैं।

3rd Viswa Hindi Sammelan New Delhi - 1983

Sri.P.V. Narsinha Rao
Chairman
Award Committee

Sri Madhukar Rao Chauthary
Organizing Chairman

Sri Bachu prasad sing
President, Organizing Committee

Prof. Vijayendra Snatak,
Secretary

Sri. Gopal Krishna Adig
Bangalore

Sri Navakanth Barva
Assam

Sri Na Nagappa
Bangalore

Sri. Abdur Rahman Rahi
Sreenagar

Sri.Gulam Rabbani Thabam
New Delhi

Sri.Gulab Das Brokker
Bombay

Sri. Viyogi Hari
Delhi

Pandid Sreenarayan
Chathurvedi,
Lacknow

ACHARYA SRI PATTABHIRAMA SASTRI
Varanasi

Dr. Swami Sathya Prakas Saraswathi
New Delhi

Dr. Har Bhajan sinh
Delhi

Sri. Jainendra Kumar,
New Delhi

Sri. Rameswar Dayal Dubay
WARTH

Smt. Indradasya Nayake
Srilanka

Dr. Harivamsa Ray Bachan
New Delhi

Sri Dayanandalal Vasantha Ray
Moricious

Dr. N. Chandrasekharan Nair
Trivandrum (Kerala)

Sri N.V. Krishna Warier
Kerala

THAKAZHI SIVASANKARA PILLAI
KERALA

Dr. Surendra Sivadas Barlinge
Poone

Sri. Gangasaran Sinha
New Delhi

Smt. Rajalekshmi Raghavan
New Delhi

Sri Jedhalal Joshi
Ahmadabad

Dr. Babu Ram Saksena
Ilahabad

Dr. Seethakanth Mahapathra
Orrissa

Sri Balasauri Reddy
Madras

Sri Sankar Rao Lodde
Wardha

Sri. Vijaya Thendul
Badri Dham
East Bombay

Sri Karuna Kusalasya

Sri Ahamad Hamesh

Sri Lue Ko Nan

Smt. Anna Maria D Engalis

Sri Alakseyee Barghudarov

Dr. Vivekananda Sharma
Phiji

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

२ अक्तूबर २०१२ - २ जनवरी २०१३ अंक, वर्ष १९-२०, नं ६१-६२ **(संयुक्तांक)**, लक्ष्मीनगर, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४

सम्पादक

डा० एन० चन्द्रशेखर नायर

संरक्षक

श्रीमती शांता बाई (बेंगलोर)
श्री. डी.शशांकन नायर
श्रीमती कमला पद्मगिरीश्वरन
डा० वीरेन्द्र शर्मा (दिल्ली)
डा० अमर सिंह वधान (पंजाब)
श्री. हरिहरलाल श्रीवास्तव (काशी)
श्रीमती के. तुलसी देवी (चेन्नै)
श्रीमती रजनीसिंह
डा. मिनी सामुवल
डा. सविता प्रमोद

परामर्श-मण्डल

डा० एस.तंकमणि अम्मा
डा० मणिकण्डन नायर
डा० पी.लता
श्रीमती आर. राजपुष्पम
श्रीमती एल. कौसल्या अम्माल
श्रीमती रमा उण्णित्तान

सम्पादकीय कार्यालय

श्रीनिकेतन, लक्ष्मीनगर,
पट्टम पालस पोस्ट
तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४
दूरभाष-०४७१-२५४१३५५

प्रकाशकीय कार्यालय

मुद्रित : (द्वारा)
श्रीरामदास मिशन मुद्रणालय,
चेंकोट्टकोणम, तिरुवनन्तपुरम-८७
मूल्य-एक प्रति: २०.०० रुपये
आजीवन सदस्यता : १०००.००
संरक्षक : २०००.००

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका कहाँ कहाँ जाती है?

कन्याकुमारी, मैसूर-२, महाराष्ट्रा, मणिपुर, मद्रास-६, कलक्कता-२, नई दिल्ली (अनेक स्थान), गुन्डूर, त्रिवेन्द्रम (अनेक जगहें), बागपत (यु.पी.) उन्नाव (उ.प्र.), बिलासपुर (म.प्र.), गुंतकल, जबलपुर, इलहाबाद, अहमदाबाद, बिरख्रडी, जमशेदपुर, लातूर, हैदराबाद, रतलाम, देवरिया, गाजियाबाद, इम्फाल, चुडीबाज़ार, पीली भीत, फिरोजाबाद, अम्बाला, लख्रनऊ, बलांगीर, बिहार, पटना, गया, बांका, ग्वालियर, भगलपुर, देवधर, जयपुर, बनारस, तृशूर, आलप्पुषा, मेरठ केन्ट, कानपुर, उज्जैन, पानीपत, होरंगाबाद, सीतामठी पोस्ट, प्रतापगढ, सरगुजा, बिजनौर, भीलवाडा, सतना, रेलमंत्रालय, तिरुवल्ला, वर्कला, कोट्टयम, नई माही, ओट्टप्पालम, चेप्पाड, लक्किडि, नेय्याट्टिनकरा, कोषिकोड, पय्यन्नूर, कोल्लम, मान्नार, मंगलोर, पुरनपुर, पंजाब, विशाख्रपटनम

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय नई दिल्ली द्वारा निर्देशित जगहें :

तमिल नाडु:- अरुम्बाक्कम, तोरापक्काओ, मद्रास, चेन्नै-३२, क्रोमोपेट्टा, चेन्नै-२१, चेन्नै-२, चेन्नै-८, कान्चीपुरम, तिरुचिरापल्ली, तिरुचिरापल्ली-२, नोर्त अरकोट, ताम्बरम, कोयम्बतूर, सेलम, सेलम-२६, चेन्नै-३४, चेन्नै-२४, तिरुचिरापल्ली-२, चेन्नै-३०, कोयम्बतूर-४, चेन्नै-२८, चेन्नै-८६। **गुजरात:-** अहमदाबाद, बरोडा। **कर्नाटक:-** बांगलोर, चित्रदुर्ग, श्रीनिगेरी, मौंगलोर, मैसूर, हस्सन, मान्डीया, चिगमौंगलोर, षिमोगा, तुमकूर, कोलार। **महाराष्ट्रा:- मुम्बई,** कोलाबा-मुम्बई, मुम्बई-२०२, माटुंगा, मुम्बई-८, मुम्बई-८६, अन्देरी-६९, मुम्बई-२६, मुम्बई-८७, मुम्बई-२, औरंडगाबाद-३, औरंडगाबाद-२, औरंडगाबाद-१, नागपुर, रामटाक-नागपुर, सताना, नन्दगौन-नासिक, पूना, पूना-१, पूना-४, मानमाड-नासिक, चन्द्रपुर, अमरावती, कन्डहार, कोलहापुर, बानडरा, अकोला, नासिक, अहमदनगर, जलगौन, दुलिया, सांगली-कोलहापुर, षोलापुर, सतारा, सान्ताक्रूस, बारसी-४१३, माटुंगा, संगली-४१६। **वेस्ट बंगाल:-** कलक्कत्ता। **हैदराबाद:-** सुल्तान बाज़ार। **गौहाटी:-** कानपुरा। **नई दिल्ली:-** आर, के पुरम। गोवा:- मपुसा-५०७।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेख्रक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं हैं। सम्पादक

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका केरल विश्व विद्यालय से अनुमोदित पत्रिकाओं की सूची में शामिल की गयी है। (संपादक)

www.hindisahityaacademy.com

सम्पादकीय

अधार्मिक जीवन का एकमात्र मूल है मद्यपान

आज सारा देश नैतिक ढीलापन महसूस कर रहा है। व्यक्तिजीवन अनाचार को सहज मिजाज की साधुता देता है। इसका मतलब यह है कि समाज जीवन में नियम का उल्लंघन होने से डरने की जरूरत नहीं है। याने शासन निक्रिय हो गया है। अर्थात् आज जीवन में होनेवाली विकृतियों एवं जटिलताओं के नग्न चित्रण ठीक साबित कर देते हैं।

हम अख़बारों में आनेवाली कलुषित एवं बुरी वार्ताओं को पढ़ते हैं। अख़बार भी उन ख़बरों को प्रथम पृष्ठ में मोटे अक्षरों में छापता है मानो ये वार्ताएं प्रथम पृष्ठ में ही आने योग्य हैं। सोचिए नाना पोती से अविहित संबन्ध स्थापित करता है। पिता अपनी बेटी को दूराचारियों के हाथ में बेचता है और वह उनसे मिलकर पुत्री को कलंकित करता है। इसप्रकार की वार्ताएं आजकल देश भर में आती हैं। आज के दिनों में दिल्ली में घटित एक बेचारी बालिका के साथ किया गया व्यभिचार बुलंद वार्ता बनी हुई है। पारलमेंट तक इसपर चर्चाएं बराबर चलीं। महिलाओं का प्रतिरोध चला, जुलूस निकला, हड़ताल चला। बडे-बडे जजों को नहीं, बडे-बडे शासनाधिकारियों को भी इस घटना पर नौकरी अथवा अपने पदों से इस्तीफा देने का भय लग गया है। दो चार गुण्डों ने एक कुमारी से बलात्कार किया, एक बस के भीतर!!

दिल्ली में यह जो घटना हुई, वह देश में सब कहीं चलती है। क्योंकि मनुष्य शराब के नाश में है। शराब सब कुछ करा देती है शराब पिया हुआ विकृत मनुष्य पिता होने पर भी पिता की प्रज्ञा से अवगत नहीं। भाई, मामा, नाना, दादा भी नैतिक व्यवहार करने को बाध्य जैसा नहीं है। इसी मिजाज को साहित्य में लगा देने को सोचता है साहित्यकार। उसे अवगुण के रूप में नहीं, प्रोत्साहन के रूप में चित्रित करने में जागरूक है। यह पागलपन कौन सृजित करता है। सोचने की बात है। धिकार है, इसे सृजित करती है, हमारी सरकार!! सरकार शराब बेचकर उस पैसे से राज्य चलाता है। देश पर शराबियों को पैदा करती है। घर-घर को शमसान बना देती है। जन-जन को रोगी बना देती है। मनुष्य-मनुष्य को कंगाल बना देती है। कचहरी की व्यवस्था करती है। पुलिस की संख्या बढा देती। यह भी नहीं सोचती कि यह पुलिस स्टेशन जानेवाले फरियादी को मारती है कि नहीं। देश में अपराध और अन्याय, पाप और महापाप का, उत्सव मचाती है। जजों तक अपराधी एवं ख़ूसचोर बनते हैं। सच पूछे तो ध्यान देने की बात ही गलत साबित हो गयी है। आज पुलिस स्टेशन संकटों को सुनने का अभयकेन्द्र नहीं, मृत्यू भय देनेवाला व्याघ्र संकेत है। आज कचहरी-अदालत अपराध सुनने और अपराधी को दंड देने का न्याय मंदिर नहीं है। आज विद्यालय गुरुजनों का जीवन मंत्र पढ़ाने का अक्षराकार मंदिर नहीं। आज लोकसभा और राज्यसभा जनप्रतिनिधियों से भरे नीति निपुण और शांति-प्रिय लोगों का भव्य स्थान नहीं है, तो जन जीवन में संतोष और समाधान कहां जाकर ख़ोज लाये!

यह स्थिति देख़नेवाला बेचारा नागरिक यदि अन्त में सोचे कि यहाँ कोई शासन होता है, जो सब अनाचारों को देख़कर भी सब कुछ सहकर हाँ में हाँ मिलाये रहता है, तो उसे गलत समझना नहीं पडेगा। क्योंकि सर्वत्र शराब की नशा छा गयी है।

डॉ.एन.चन्द्रशेख़रन नायर

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी

लक्ष्मी नगर, पट्टम पालस, तिरुवनंतपुरम - ६९५००४

३२ वाँ वार्षिक सम्मेलन : रिपोर्ट

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी का ३२वाँ वार्षिक सम्मेलन २६-६-२०१२ सबेरे ९.३० से अपराह्न ५ बजे तक मन्नम मेम्मोरियल नेशलन क्लब, स्चाच्यू में मनाया गया। श्रीमती आर.राजपुष्पम के प्रार्थनागीत के साथ सम्मेलन की शुरुवात हुई। महात्मागाँधी कालेज की प्राध्यापिका डॉ. उषाकुमारी के.पी.ने सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया। अकादमी के महामंत्री डा.एस.तंकमणी अम्मा ने अध्यक्षीय भाषण द्वारा अकादमी की ३२ वर्षों की उन्नति के बारे में सदस्यों को खूब जानकारी प्रदान की। आदरणीय रजनीसिंह (विख्यात कवयित्री उ.प्रदेश) ने नेशनल सेमिनार का उद्घाटन अकादमी की खूब प्रशंसा करके किया था। डॉ. टी.शान्तकुमारी (पूर्व प्राध्यापिका, एम.जी.कालेज) ने बीज बाषण द्वारा अकादमी के कार्यकलापों के बारे में सविस्तर जानकारी प्रदान की।

फिर आलेख्र प्रस्तुति कार्यक्रम शुरु हुआ। उसमें केरल के विश्वविद्यालयों से हिन्दी प्राध्यापकों और हिन्दी शोध छात्राओं ने भाग लिया।

१. केरल की हिन्दी कविता - कुमारी रीजा एस. (शोध छात्रा के.वि.वि.)
२. केरल का हिन्दी महाकाव्य - कुमारी आशादेवी (शोध छात्रा के.वि.वि.)
३. केरल का हिन्दी काव्य साहित्य - डॉ. अनूपाकृष्णन (अतिथि अध्यापिका, के.वि.वि.)
४. केरल का हिन्दी निबंध साहित्य - डॉ. के.पी.प्रमीला (प्राध्यापिका, श्री. शंकराचार्य वि.वि. कोट्टयम)
५. केरल का हिन्दी गवेषण साहित्य - डॉ. सुनिलकुमार एस. (प्राध्यापिक, यूणिवर्सिट्टी कालेज)
६. केरल का हिन्दी अनुवाद साहित्य - उपन्यास - डॉ. आशा जी. (प्राध्यापिका, संस्कृत कालेज)
७. केरल का हिन्दी अनुवाद साहित्य - अन्य विधाओं में - डॉ.श्रीलता विष्णु (प्राध्यापिका श्री.शं.वि.वि.)
८. केरल का हिन्दी काव्य साहित्य - राख्री बालगोपाल (प्राध्यापिका कार्यवट्टम)
९. केरल का एकमात्र संपादकीय ग्रंथ - अवतरणिका ग्रंथ - आत्मकथा ग्रंथ - डॉ. उषाकुमारी के.पी. (प्राध्यापिका एम.जी.कालेज)

इन विषयों पर प्रतिभागियों ने चर्चा की। २ बजे से २.३० बजे तक भोजन।

अपराह्न ३ बजे से वार्षिक सम्मेलन श्रीमती आर. राजपुष्पम के प्रार्थनागीत के साथ शुरु हुई। अकादमी के महामंत्री डॉ.एम.तंकमणिअम्मा ने सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया। अकादमी के मंत्री श्रीमती आर.राजपुष्पम ने अकादमी का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। अध्यक्ष आदरणीय डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर ने अकादमी के संपूर्ण इतिहास का संक्षिप्त विवरण करते हुए हिन्दी और उसके साहित्य श्रीवृद्धि केलिए किस हद तक घोर परिश्रम किया उसका भी स्मरण किया। उन्होंने यह भी याद दिलाया कि केरल हिन्दी साहित्य अकादमी को एक शशक्त राष्ट्रीय संस्था के रूप में दुनिया जानती है। अकादमी ने केरल में हिन्दी का एक वातावरण पैदा किया। अकादमी का वेबसाईट उसकी सच्ची पहचान करने में जागरुक है। उसने अपने उद्देश्यों एवं लक्ष्यों का पूरा पालन किया है। केन्द्रमंत्री माननीय वेणुगोपालजी की अनुपस्थिति में वो महती क्रिया एक हरिजन कुमारी राजलक्ष्मी ने, जो विश्वविद्यालय की शोधछात्रा है संपन्न कर दी।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के आदेश से बनी योजना के अनुसार अकादमी द्वारा संपादित किया गया ग्रंथ केरल के हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास, जिसका लेख्रक डॉ.एक. चन्द्रशेखरन नायर जी है, हिमाचल प्रदेशवासी प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ.प्रत्यूष गुलेरी ने कुमारी राजलक्ष्मी से स्वीकृत किया।

विशिष्ठ हिन्दी अतिथि विद्वानों का अकादमी का स्नेह पुरस्कार

अकादमी ने हिन्दी के प्रसिद्ध कवयित्री उ.प्र. की नामी परिवार की संतती श्रीमती रजनीसिंह जी को अकादमी का सर्वश्रेष्ठ श्री. मूकांबिका देवी पुरस्कार और हिमाचल प्रदेश के सर्वमान्य साहित्यकार एवं विद्यान डॉ. प्रो.प्रत्यूष गुलेरी जी को श्रेष्ठ अभिनंदन पुरस्कार प्रदान किए।

मानव संसादन विकास मंत्रालय का पुरस्कार प्रसिद्ध ग्रंथ कर्त्री एवं हिन्दी विभागाध्यक्षा डॉ.प्रो.के.पी.प्रमीला जी को प्रदान किया (१०००० रुपये)

स्टेट बैंक आफ त्रावणकोर (एस.बी.टी) के दो हिन्दी पुरस्कार

१. मौलिक साहित्य केलिए (मौन बोल रहा है) (कविता संग्रह) - डॉ. सुवर्णलता एम.सी. (प्राध्यापिका, हि.वि.शं.वि.वि. तलश्शेरी)
२. शोध-ग्रंथ, नयी कहानी, कथ्य शिल्प और उपलब्धियाँ - डॉ.अनूपा कृष्णन (अतिथि अध्यापिका) जी को प्रदान किया। दोनों पुरस्कार एस.बी.टी. के महाप्रबंधक डॉ.कृष्णन जी द्वारा प्रदान किया गया था।

अकादमी पुरस्कार वितरण

प्रथम - कुमारी राजलक्ष्मी (बी.ए., एम.जी.कालेज शोध छात्रा)
द्वितीय- कुमारी आशादेवी एम.एस. (के.वि.वि.कार्यवट्टम)
तृतीय - (१) कुमारी रीजा आर. (शोध छात्रा के.वि.वि.)
(२) स्मिता ए. (आर.आई.एल.टी., त्रिवेन्द्रम)

इनको तीन हज़ार, दो हज़ार, १००० के हिसाब से अकादमी चेयरमान डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी द्वारा सम्मानित किया गया।

नमस्कार - श्रीमती रजनीसिंह, उत्तरप्रदेश का भाषण

सम्माननीय मंच और अति सम्माननीय सभांगार में उपस्थित विद्वत समाज, बँधुओं, बहिनों और बच्चो, सर्वप्रथम केरल राज्य की पावन भूमि को मेरा नमन और वंदन है। 'केरल हिन्दी साहित्य अकादमी' के ३२ वें वार्षिक सम्मेलन के कार्यक्रम की इस पावन वेला में मैं अपनी विनम्र उपस्थिति से अपने को गौरवान्वित महसूस करते हुए, निमंत्रण कर्ता अति आदरणीय देशरत्न डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी का हृदय से आभार तथा धन्यवाद व्यक्त करती हूँ। इस भव्य उत्सव पर मैं हृदय से सभी को बधाईयाँ देती हूँ कि राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति आपका जज्बा और जोश देशप्रेम की जीती जागती तस्वीर पेश करने में सक्षम है। मुझे यहाँ मैथलीशरण गुप्त की दो लाईनें याद आ रही हैं कि-

जो मरा नही है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

सचमुच भारत देश अपनी संस्कृति, सभ्यता और प्रेम के लिए विश्वस्थल पर प्रख्यात रहा है। इसका साक्षात् उदाहरण मैंने, दक्षिण में आकर देख लिया। इससे पहले भी एक बार बंगलौर में 'अखिल भारतीय भाषा सम्मेलन' द्वारा डॉ.शांतावीर महा स्वामी जी के कर कमलों से कोलाठा मठ में 'साहित्यश्री' सम्मान के लिए गई थी तो वहाँ का शुभ्र वातावरण देखकर मैंने एक समारोह में उत्तर भारतीयों को ये संदेश दिया था कि वास्तविक भारतीय सभ्यता और संस्कृति देखनी है तो दक्षिणवासियों को देखो।

वास्तव में यह सुखद है कि हमारे दक्षिणवासियों ने सभ्यता को जकड़कर पकड़ रखा है। डॉ.एन.चन्द्रशेखर नायर साधुवाद के पात्र है जिन्होंने इतने लम्बे समय में हिन्दी के सेवा, प्रचार और प्रसार में अपना बहुमूल्य समय अर्जित किया है। केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के १६८२ में पंजीकृत, कराने से लेकर वर्तमान तक हिन्दी भाषा का केरल में एक 'वटवृक्ष' स्थापित करने में अहम भूमिका निभाई है। केरल में हिन्दी का कार्य राष्ट्रीय कार्य के रूप में अंशित किया है। स्कूलों और कालिजों में हिन्दी अनिवार्य भाषा के रूप में पढ़ाई जा रही है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी हिन्दी और उसके साहित्य को समुचित स्थान प्राप्त है जिससे अनेक हिन्दी लेखक और साहित्यकार केन्द्र सरकार तथा हिन्दी संस्थाओं द्वारा सम्मानित किए गए हैं। साथ ही वरिष्ठ कार्यकर्त्ता तथा साहित्यकार केन्द्रीय मंत्रालयों के हिन्दी सलाहकार मनोनीत हुए हैं, यह सब अत्यन्त सकारात्मक कदम हैं। यह सब जानकारी दिलाने का श्रेय डॉ.एन.चन्द्रशेखर नायर द्वारा रचित पुस्तक 'केरल के हिन्दी साहित्य का बृहद इतिहास' को जाता है। इस पुस्तक का प्रथम संस्करण १६८६ में किया गया, पुनः २०१२ में जिसमें ११०० प्रतियाँ प्रकाशित की गई हैं, इसी से इस पुस्तक की गुणवत्ता और माँग का गणित लगाया जा सकता है। वास्तव में यह पुस्तक 'केरल के हिन्दी साहित्य का बृहद इतिहास' शोध-विद्यार्थियों और ज्ञानार्थियों के लिए पठनीय पुस्तक है। हिन्दी भाषा के इतिहास में दक्षिणवासियों ने सदैव से अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी से देश को लाभ पहुँचाया है। डॉ. नायर ने अपने परिश्रम और तपस्वी भावभूमि से इस पुस्तक की रचना की है जिसमें साहित्यकारों की सेवाओं, रचनाओं को समग्रता से हुए उन्हें सुव्यस्थित रूप से दर्शाया गया है। देशप्रेम की प्रबल भावना को भाषा के माध्यम से जोड़ने का सार्थक प्रयास अपने आप में विलक्षणता का प्रतीक है। एक बात ये भी महत्वपूर्ण है कि अपने द्वितीय संस्करण में नवीनता को पूर्ण स्थान दिया गया है। इससे नवोदित साहित्यकारों को पहचान मिली है।

मूर्धन्य साहित्यकार की इस बहुमूल्य कृति का लोकार्पण से होने से इसमें चार चाँद लग गए हैं। डॉ. नायर की प्रतिभा से सभी वाकिफ हैं कि डॉ. नायर केवल अहिन्दी या मलयालम साहित्यकार ही नहीं वरन् एक सम्पूर्ण संस्थान हैं जिसमें विविधताओं के रंग बिरंगे ज्ञानपुष्प खिलते हैं और पूरे समाज को अपनी सुगंध से सुवासित कर रहे हैं। ये कवि, निबंधकार, उपन्यासकार कहानीकार, समीक्षक, चित्रकार और सहृदय इंसान हैं। अनेक सम्मानों से विभूषित व्यक्तित्व देश भाषा की सेवा में जी-जान से लगे हुए हैं। यह जानकर सुखद आश्चर्य हुआ कि अठारवीं सदी के मलयालम हास्य कवि कुंचन नंपियार ने गोसाई ब्राह्मणों के वार्तालाप को ऐसे व्यक्त किया है।

तुम्हारा मूलक कौन मूल्लक? हमारा मूलक काशी मूलक।
तुम्हारी टिकानी काहे रे बाबा? हमारी टिकानी सीता राम।।

मैं आत्मविभोर और विस्मृत हूँ कि दक्षिम में हिन्दी अनुरागियों ने बहुत पहले से ही अपने भाव हिन्दी में प्रकट करने प्रारंभ कर दिए थे जैसा कि महाराजा स्वातितिरुनाल रामवर्मा रचित गीतों में स्वस्थ

३२ वाँ वार्षिक सम्मेलन : रिपोर्ट...

फिर डॉ. फैसलखान (एम.टी.निंस मेडिसिट्टी पी.वी.सी.नूरुल इस्लाम वि.वि.), डॉ. प्रत्यूष गुलेरी, श्रीमती रजनी सिंह, डॉ.वि.वि.विश्वम, निदेशक, विद्यापीठ, श्री.के.राजेन्द्रन (मानेजिंग ट्रस्टी, यवनिका पब्लिकेशन्स) आदियों ने मंगलशंसाएं अर्पण कीं। सभी ने अकादमी की बढ़ती प्रगति पर प्रशंसात्मक भाषण दिया। फिर डॉ. कुलदीप सिंह चौहान जी, हिन्दी प्रबन्धक, एस.बी.टी. पूजप्पुरा, ने सदस्यों को कृतज्ञता ज्ञापन किया।

डॉ. उषाकुमारी के.पी. (महात्मा गाँधी कालेज) संचालक था। विशाल हॉल में अकादमी में प्रतिमास भारत भर से आनेवाली लगभग २५० पत्रिकाओं को सुसज्जित रखा था। साथ ही चेयरमान डॉ.चन्द्रशेखरन नायर जी के चुने गये ६० ग्रंथों की भव्य प्रदर्शिनी भी थी।

सभा में उपस्थित डेढ़ सौ प्रेक्षकों को चायसत्कार की भी व्यवस्था की गयी थी। शाम को छः बजे राष्ट्रगीत के साथ-साथ समारोह का सुंदर समापन हो गया।

जय हिंद जय हिंदी

मंत्री, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी

व शुद्ध हिन्दी शैली का प्रयोग किया जाना - उनकी श्रृंगार रस की यह कविता सन् १७२०-२५ के समय की है।

बंसी वाले ने सन मोहा
बोली बोले मीठी लागे, दर-दर उमंग करावे।
वेणू बजा के तान गावे, निस दिन गोपियाँ रिझावे।।

इसं १६३५ ईसवीं में श्री. वेकटेश्वरन ने नागरी प्रचारिणी पत्रिका में प्रकाशित किया था।

बीसवीं सदी के उपयुक्त हिन्दी आंदोलन के पूर्व राजा स्वाति तिरुनाल के गीतों के अलावा त्रिवेन्द्रम के हस्तलिखित ग्रंथालय में दो पुराने द्विभाषा कोश मिले हैं। दो व्याकरण ग्रंथ भी हस्तलिखित मिले हैं। ये चारो ग्रंथ ताड़ पत्र पर मलयालम लिपि में लिखे गए हैं।

स्वाधीनता पूर्व के हिन्दी कवियों ने महात्मा गाँधी के विचारों को रुपायित करना काव्य की प्रतिबद्धता माना था। हरिजनोद्धार, ग्रामीण पुर्ननिर्माण, अस्पश्यता-निवारण आदि समकालीन ज्वलंत प्रश्नों को अपनी कविता का विषय बनाया - जिनमें विमल केरलीय, श्रीमती लक्ष्मीकुट्टी देवी, श्रीमती भारती, देवी तथा सर्वश्री टी.के.गोविंदन टेलिचेरी की कविता, अहूत की आह की कुछ पंक्तियाँ देखे-

दयानिधे, यह उच्चनीचता क्या तुमको भी माती है,
अद्यूत कहानेवालों पर दया न तुमको आती है।
हाय! कुओं से जल मरने का हमें कही अधिकार नहीं।

इसी कड़ी में अन्य विद्वान हिन्दी प्रचारकों ने हिन्दी के प्रचार प्रसार की राष्ट्रीय भावना और देशीय उत्थान के उद्देश्यों से जोड़कर अपने विचारों को अभिव्यक्ति करने में अपना सम्मान महसूस किया था। और साथ ही पत्र-पत्रिकाओं को भी निरंतर प्रकाशित कराने के लिए सामग्री प्रदान की थी। इसी संदर्भ में ज्ञात हुआ कि-

दक्षिण भारत में सर्वप्रधम महात्मागाँधी ने १६१५ में मद्रास में हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना की, जो आज एक वटवृक्ष बन चुकी है। यह एक सार्थकि और राष्ट्रप्रेम की प्रबल ज्योति को जलाने में साकारात्मक भूमिका निभा रही है। यह हिंदी भाषा के लिए शुभ संदेश है।

डॉ. नायर ने इस पुस्तक से अवगत कराया कि संस्कृत भाषा को सीखने से शंकर जिनकी मातृभाषा मलयालम थी और रामानुज जिनकी भाषा तमिल थी, साथ ही मध्व जिनकी भाषा कन्नड थी और वल्लभ जिनकी भाषा तेलुगु थी उन्होंने संस्कृत सीखकर पूरे भारत वर्ष में अपनी प्रतिभा और ज्ञान का परिचय फैलाया, यह अत्यन्त विचारणीय पक्ष है। आज 'संस्कृत' के स्थान पर 'हिन्दी' वही भूमिका निभा रही है अतः हिन्दी भाषा के द्वारा हम पूरे देश में अपना ज्ञान अपना साहित्य बाँट सकेंगे और यश अर्जित कर सकेंगे। वास्तव में यह अति सरल तथा राष्ट्र हितार्थ कार्य होगा। शिक्षा का शत प्रतिशत होना भी केरल में हिन्दी का छठी कक्षा से शोध तक सुविधा होने से ही संभव हुआ है। मुझे यह ज्ञानकर अपार प्रसन्नता हुई कि केरल का विद्यार्थी स्वभावतः हिन्दी के प्रति इच्छारत है। दक्षिण सिनेमा का संसार वर्तमान में हिन्दीमय बनता जा रहा है और हिन्दी सिनेमा दक्षिणमय होता जा रहा है, इससे पता चलता है कि हिन्दी के जुड़ने से सीमा दूरी भी समाप्त हो जायेंगी। केरल में १२ मुख्य संस्थायें हिन्दी के प्रचार प्रसार तथा पुस्तक प्रकाशन आदि में सक्रिय भूमिका निभा रही है। जिनमें मद्रास, एरणाकुलम, त्रिवेन्द्रम, रामपुरम, पय्यन्नूर, माराकिुम, वेचूर, त्रिशूर आदि हैं। समय २ पर देश के प्रधान मंत्रियों ने भी इनके संगठन और सुगठन के लिए अपनी अहम सहायता दी है, यह प्रशंसनीय है। आज भी केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय नई दिल्ली, अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ, नई दिल्ली, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद नई दिल्ली, केन्द्रीय दिल्ली संस्थान आगरा द्वारा प्रचारकों के हितार्थ शिविर आदि आयोजित किए जाते हैं, सराहनीय कदम है। प्रख्यात लेखिका डॉ. एस.तंकमणि अम्मा, प्रो.के.केशवन नायर जी आदि का हिन्दी के लिए कार्य सराहनीय तथा प्रशंसनीय है।

साथ ही ज्ञानपीढ़ पुरस्कार से सम्मानित हमारे विद्वान साहित्यकार, दक्षिण भूमि पर साहित्य का नवनिमणि कर अपना कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। इस क्षेत्र में अनुवादकारकों ने भी अहम भूमिका निभाई है जिससे क्षेत्र दूरियाँ कम होकर अच्छा साहित्य मिलने में सरलता हासिल हुई है। साहित्य अमृत पत्रिका में अक्सर अनुवादित कविता-कहानी पढ़ना आसान हो जाता है।

आपको जानकर हर्ष होगा कि मेरी एक 'काव्यकृति' 'माँ तथाता' को एक विदूषी साहित्यकार श्रीमती राम कल्याणी ने तमिल भाषा में अनुवादित किया है। इसकी तमिल भाषा प्रतियाँ आज शायद वितरित की जाएँ। इससे उत्तर-दक्षिण का मेल होने में स्वाभाविकता आयेगी। ऐसे ही अनेक अनुवादक हिन्दी भाषा में विभिन्न भाषाओं की पुस्तकों को अपने कुशल अनुवादन से सुव्यवस्थित कर पाठकों को मूल्यवान साहित्य से लाभांवित कर रहे हैं, वहीं सीमाओं की दूरी भी समाप्त कर रहे हैं।

यही बहुमूल्य कार्य अपनी बहुमूल्य पुस्तक केरल के हिन्दी साहित्य का बृहद इतिहास लिखकर ज्ञान-मनीषी डॉ.एन.चन्द्रशेखरन जी ने किया है। लेखन की करीब-करीब प्रत्येक विधा में उपाधि प्राप्त शोध कर्ताओं का सम्पूर्ण विवरण देकर सराहनीय कार्य किया है। केरल के हिन्दी साहित्यकारों का उनकी बहुमूल्य रचनाओं के साथ परिचय कराकर शोधार्थियों के लिए भी जानकारी का बृहद खजाना खोल दिया है। यहीं तक नहीं उनकी सोच का पैमाना, आकाश की बुलंदियों को छूता केरल में प्रकाशित हिन्दी पुस्तकों की सूची और विवरण देने में भी अपनी कुशलता दिखाने में सक्षम रहा है। तिरुवनंतपुरम और मैं आत्मकथा लिखकर पाठकों पर बहुत बडा उपकार किया है, कारण स्पष्ट है कि आत्मकथा में जीवन की सच्चाईयों को ईमानदारी से प्रकाशित कर जीने की कला से रुबरु कराया गया है। मैं हृदय से ऐसी पुस्तक और पुस्तक के रचयिता का स्मान और अभिनंदन करती हूँ। कोटिशः धन्यपुष्प मेरी ओर से डॉ.नायरजी को तथा उपस्थित प्रदेश के विद्वान समाज को। भारत एक है समस्त भारतवासी उसकी संतान है। अंत में अपनी एक कविता की कुछ पंक्तियों के साथ अपनी वाणी को विराम देना चाहुँगी।

आज हिन्दी में मुस्कराहट है। ●

वार्षिक सम्मेलन में प्रस्तुत पेपर:

डॉ.राखी बालगोपालन

केरल की आधुनिक हिन्दी कविता (सन् १९९० से लेकर)

केरल की हिन्दी कविता की सुदृढ़ परंपरा का प्रारंभ स्वातंत्र्योत्तर काल से माना गया है। कविता के प्रारंभिक उन्नायकों में के वासुदेवन पिल्लै, पी.नारायण, पं.नारायण देव, डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, आनंद शंकर माधवन, एम.श्रीधर मेनन, के.दामोदर प्रसाद, केशवन नंपूतिरि आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन कवियों से प्रभावित और प्रोत्साहित होकर आगे कई नये-नये कविगण इस क्षेत्र में पदार्पण किए और आज केरल की हिन्दी कविता अपने जोशें पर हैं। कुन्नुकुषि, भास्कर वर्मा, डॉ.एन.रवीन्द्रनाथ, डॉ.जे.उषाकुमारी, डॉ.पी.के.वेणु, डॉ.ए.अरविन्दाक्षन, डॉ.जी.कमलम्मा, श्री.बाइनु, डॉ.सुचित एन. तंपी, डॉ.षण्मुखन आदि वर्तमान काव्य-क्षेत्र की प्रतिभाएँ हैं।

डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर द्वारा विरचित कविता है 'हिन्दी के प्रति'। प्रस्तुत कविता में राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्रजानता को व्यक्त करते हुए दक्षिणवालों को हिन्दी में न लिखने का उपदेश देने वाले उत्तरवालों की मानविकता पर प्रश्न चिह्न लगाया गया है।

'देखता हूँ मैं हर कहीं; तुझे दासी बनाये रखने में; हिन्दी क्षेत्र जागरूक है; मंत्रालय में; नौकरी के क्षेत्रों में; प्रकाशन की दिशा में; हिन्दी भाषी लोगों के हाथों; तेरी जिन्दा की जा रही है! तेरा अपमान किया जाता है! तू कुर्सी पर कभी न बैठे; इस बात पर वे ज्ञान दे रहे हैं!' (बात-पृ.सं.२५)

कवि ने यथार्थ सत्य को प्रकट किया है। इस दिन तक हिन्दी का स्थान हमारे राष्ट्र में द्वितीय ही है। आपका नवीनतम काव्य महाकाव्य के रूप के प्रत्यक्ष हुआ है, जो अन्यत्र आया है।

'हेमा' उपनाम की कवयित्री सुश्री टी.एस.पोन्नम्मा द्वारा लिखित कविता है - 'एक जमाना था'। कविता की पंक्तियाँ यों है -

'एक ज़माना था जब कि; सागर से सागर तक फैला था - तेरा साम्राज्य; सुनहली लिपियों ने लिखा था - तेरा इतिहास; सत्यलोक में गूँजती थी - तेरी शान की भेरी' (बात - पृ.सं.३८)

भारत माता की अनुपम संस्कृति और सभ्यता को उजागर करती हुई आरंभ होनेवाली यह कविता भारत माता के नष्ट हो रहे आधुनिक चेहरे का भी दर्शन कराती है -

डॉ. एन.रवीन्द्रनाथ की कविता 'कवि से' समाज की विद्रूपताओं की ओर विमुख होकर निष्क्रिय कवियों के प्रति अर्पित है। कवि की निष्क्रियता असहनीय होती है। जिस समाज को उसने जाग्रति का संदेश दिया था, वह आज सो रहा है। कवि कहता है -

'तुम्हारा पौरुष - प्रभुत्व आज सो गया है; शायदकिसी ने तुम्हें भुला दिया है जिससे - तुम जन तंस के विरुद्ध न लड़ों; जन जन से आग की भीख न माँगो' (बात - पृ.सं.५४)

डॉ. जे.रामचन्द्रन नायर की कविता 'अगर मैं गौतम होता'। राज्य और राजनीति को छोड़ने वाले गौतम की महानता पर यहाँ विचार किया गया है क्योंकि आज गौतम बनना मूर्खता है। कवि के विचार यों प्रकट हैं-

'अगर मैं गौतम होता; यशोधरा को नहीं छोड़ता
क्योंकि यशोधरा सुन्दरी है।'

राजनीति के विभिन्न पाठ भी कविता में व्यक्त किया गया है जो वर्तमान राजनीति के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। यथा-

आख़िर राजनीतिज्ञ ऐसा क्यों हमेशा बना रहते हैं? अगर राजनीतिज्ञ और उसकी परंपरा ऐसी पाखंडता पेश करती आ रही है तो निश्चित ही इसका कारण प्रतिक्रिया विहीन जनता ही हैं। इस तथ्य को भी कवि ने उठाया है -

डॉ. एन.रामन नायर की कविता 'ठंडा लोहा गरम हथौड़ा' उपर्युक्त सत्य का उद्घाटन करती है -

'जनता का लोहा ठंडा है आज;
सत्ता का हथौड़ा गरमागरम।' (बात-पृ.सं.६५)

डॉ.पी.वी.विजयन ने अपनी छोटी सी कविता 'आधुनिक' में सरल शब्दों में साहित्य दुनिया के एक बड़े सत्य को उजागर किया है-

'आधुनिकता नशा है; कहा आलोचक ने।
सामने बैठा कवि।' (बात-पृ.सं.७४)

रचनाकार को अपने विचारों को कभी भी किसी के हवाले करने की ज़रूरत नहीं है। आलोचक की अपनी हैसियत होती है और कवि की अपनी। सही लेन-देन विचारों को बढ़ावा देती मगर उलटी-सीजी विचारें साहित्य को स्थगित कर सकती है।

आधुनिकता की तरह की एक छोटी सी कविता है 'अवशेष'। डॉ.ए.अरविन्दाक्षन इसके रचयिता है। कविता पेश है -

'कान्हा के पसीने से लथ-पथ पोशाक; राधा अब भी संभालती है; आजकल हमारे इधर; राधाओं की कमी नहीं।' (बात-पृ.से.७६)

उपर्युक्त कविताओं के विश्लेषण से निश्चय ही यह कह सकते हैं कि केरल के आधुनिक हिन्दी कवियोतं ने यथार्थ चित्रण और न्याय का पक्ष लेकर ही कविताएँ लिखी हैं। राजनीति, भाषा मानवता, सामाजिक असमता, साहित्य, प्रकृति शोषण इत्यादि विविध विषयों को अत्यंत रोचक शैली और नवीन शिल्प विधाओं का उपयोग करके पेश किया गया है। सारी कविताओं में वर्तमान के प्रति असंतोष प्रकट किया गया है। यह कवियों के सामाजिक बोध से उद्भूत हुए हैं। केरल की हिन्दी कविता हिन्दी साहित्य जगत की अमूल्य धरोहर है और आगे भी वह अपना कर्तव्य इससे भी तेज़ होकर निभाती रहेगी।

असिस्टेंट प्रोफेसर, सरकारी आर्टस् कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम

केरल का हिन्दी अनुवाद साहित्य - उपन्यास

डॉ.आशा जी.

अनुवाद वर्तमानकाल की अनिवार्य आवश्यकता है। अभाव की पूर्ति एवं जिज्ञासाओं की तृप्ति के प्रयास में मनुष्य ने अनुवाद की खोज की। अब अनुवाद का महत्व मुख्यतः विविध प्रयोजनों की पूर्ति, सब प्रकार की उन्नति तथा भावात्मक एकता की संपूर्ति के कारण उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। किसी भी भाषा के प्रचार केलिए अन्यान्य भाषाओं के संपर्क में आना अनिवार्य है। यह अनुवाद के माध्यम से ही संभव है। मलयालम के श्रेष्ठ ग्रंथों का हिन्दी में और हिन्दी के महत्वपूर्ण ग्रंथों का मलयालम में अनुवाद आया है।

मलयालम से हिन्दी में अनुवाद का मतलब द्राविड़ परिवार की एक प्रांजल मगर साहित्यिक एवं भाषापरक दृष्टि से अत्यंत विकसित भाषा से आर्य परिवार की एक काफी नवीकृत और परिवर्धित भाषा में अनुवाद से है। हिन्दी जो कि भारत की राजभाषा भी है, हिन्दी भाषा के प्रयोक्ताओं के चिंतन व रुढियाँ केरलियों के चिंतन व रुढ़ियों से अलग है।

यद्यपि केरलीय हिन्दी लेखकों द्वारा रचित मौलिक उपन्यासों की संख्या बहुत कम है, फिर भी मलयालम से हिन्दी में अनूदित एवं प्रकाशित औपन्यासिक रचनाओं की संख्या अपेक्षाकृत अधिक है। लगभग सारे पुरस्कृत एवं प्रसिद्ध उपन्यासकारों की अधिकतर रचनाएं हिन्दी में अनूदित हो गयी हैं।

'सुन्दरिकलुं सुन्दरन्मारुं' - उरूब का एक मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास है। डॉ. सुधांशु चतुर्वेदी ने उपन्यास 'सुन्दरिकलुं सुन्दरन्मारुं' का अनुवाद रोचक शैली में किया। मानव चरित्र की गहराइयों की तलाश करने में उरूब की लेखनी कामयाब हुई है। 'मप्पिला दंगे' की भूमिका में पल्लवित उपन्यास की कथा विश्वनाथन, राधा, बालामणी, सुलेमान आदि कई जीवन्त चरित्रों को मंच पर ला देती है। उपन्यास का आशावादी दर्शन कथा के समूचे कलेवर में परिव्याप्त है।

कयर तकषी के विशालकाय उपन्यास कयर (१९७०) का अनुवाद सुधांशु चतुर्वेदी ने किया है। (१९९०) अनुवाद का नाम है 'रस्सी'। केरलीय मध्यवर्ग जीवन में हुए राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों के कथासूत्रों को एक रस्सी के समान पिरोकर इस कृति की संरचना हुई है।

मलयाट्टूर रामकृष्णन के वेरुकल उपन्यास का हिन्दी अनुवाद एन.ई.विश्वनाथ अय्यर के कुशल हाथों से संपन्न हुआ है। श्री. अय्यर ने अनुवाद कार्य में इतनी सतर्कता और सूक्ष्म दृष्टि निभाई है कि मूलकृति की भाषिक और भाविक चारुता अनुवाद में बी निखर आयी है। रिश्तों में आयी शिथिलता आधुनिक मानव की जीवन्त समस्या है।

'यंत्रम' का भी अनुवाद अय्यर जी ने किया है। इस उपन्यास के भीतर दम घुटने वाले 'दिलवाले मानव' की व्यथा को बालचन्द्रन आई.ए.एस के माध्यम से उपन्यासकार ने अंकित किया है। कहना न होगा कि इस अपूर्वदृष्ट तथा नातिचर्चित भावजगत के परिचय का अवसर दिलाकर अय्यर जी ने हिन्दी जगत को उपकृत किया है।

पी. वत्सला का उपन्यास 'नेल्लु' - आदिवासी ओर जनजाति जीवन की भूमिका में पल्लवित मशहूर उपन्यास है 'नेल्लु' (१९७०) जिसका अनुवाद (१९९९) श्री. रेकेश कालिया ने किया है। परिवेशगत विशिष्टताओं और संवेदन को बहुत बारी की से भाषान्तरित करने में अनुवादक राकेश कालिया को पूरी सफलता हासिल हुई है। अनुवाद सहज और रोचक है।

हिन्दी की मशाल को सुदृढ़ हाथों में थामे रखने वाले साहित्यकारों में अग्रगणनीय है डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी। मूल रुप से मलयालम में रचित तथा हिन्दी में अनुवादित उपन्यास सीतम्मा मलयालम में विशेष ख्याति-प्राप्त एक आदर्श कृति है। तमसों मा ज्योतिर्गमय की भावना उनकी सभी कृतियों में परिलक्षित होती है। सीतम्मा में यही भावना सुखरित है। इस औपन्यासिक रचना का हिन्दी अनुवाद श्री. कवियूर शिवराम अय्यर न किया है। सीतम्मा की सीता आदर्श केरलीय नारी है। पौराणिक सीता के समान ही उसे समस्त लांछनों को अपनी पवित्रता की परीक्षा देते हुए पार करना पड़ता है। आंचलिक होते हुए भी यह कृति विशुद्ध भारतीयता से युक्त है, भारतीय जीवन को ऊर्जा देने में सक्षम है। यह दोनों भाषाओं में बहुचर्चित रचना बनी है।

पारप्पुरतु का 'आरनाषिकनेरम' (आधी घडी) पारप्पुरतु के उपन्यास प्रतिपाद्य की मौलिकता और परिवेश की नूनता से अलग पहचान रखते हैं। उनकी फौजी कथाएँ हृदयस्पर्शी हैं तथा आत्मकथांशु से अनुप्राणित भी हैं। 'अरनाषिकनेरम' नामक उनके उपन्यास को 'आधी घड़ी' नाम से डॉ. विश्वनाथ अय्यर जी ने अनूदित किया है। वयोवृद्ध कुंजोनाच्चन अपनी अंतिम यात्रा अर्थात् मृत्यु-यात्रा केलिए तैयार हो रहा है। अब उस यात्रा पर निकलने केलिए आधी घड़ी ही है। इतने समय में वह अपने जीवन की विगत मुख्य घटनाओं की याद करता है। अनुवाद बेहद प्रभावोत्पादक है।

आनन्द (सच्चिदानन्दन) मरण सर्टिफिकेट - १९९७ में प्रकाशित मरण सर्टिफिकेट मलयालम के दार्षनिक उपन्यासों के नये दौर का प्रतिनिधित्व करने वाला बहुचर्चित उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास का भावजगत आधुनिकता-बोध की गवाही देता है। सार्त्र और काफका के अस्तित्ववादी दर्शन का पूरा प्रभाव इस उपन्यास पर लक्षित होता है। मृत्यु मानव जीवन का सबसे बड़ा सत्य है। इस उपन्यास का कथ्य बहुत सरल है।

रण्टामूषमः १९७६ में रचित एम.टी. का बहुचर्चित उपन्यास है 'रण्टामूषम'। श्री.के.एस.मणी ने 'दूसरी बारी' शीर्षक देकर इसका हिन्दी में अनुवाद किया है। हमारे पुराणों में ऐसे कई स्थल हैं जो 'अर्थपूर्ण मौन' के संदर्भ हैं।

केरल की हिन्दी कहानी

डॉ.अनूपा कृष्णन

भारत में स्वतंत्रता आंदोलन जब ज़ोर पकड़ रहा था, तब हिन्दी भी इस आन्दोलन का हिस्सा बन गयी थी. भिन्न-भिन्न प्रान्तीय भाषाओं तथा संस्कृतियों का अजायबघर दिखनेवाला भारत हिन्दी के ज़रिए एक सूत्र में बन्ध गया है.

जिस समय हिन्दी का प्रचार दक्षिण में व्याप्त होने लगा, तब केरलीयों ने भी इस भाषा को नहे दिल से स्वीकार किया।

स्वातंत्र्योत्तर काल में प्रकाशकों की संख्या में हुई काफ़ी बढौत्तरी कहानी के क्षेत्र को भी विकसित करने लगी यहाँ नये-नये कहानीकार उभरने लगे और कहानी के विषय वस्तु में भी काफ़ी विस्तार हुआ। आर्यकेर, अरविन्द, केरल भारती आदि पत्रिकाओं में लिखने के साथ ही साथ उत्तर भारत से निकलनेवाली पत्रिकाओं में भी यहाँ के कहानीकार लिखने लगे। इनमें प्रमुख हैं - डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायरजी, के.नारायण जी, डॉ.गोविन्द शणाईजी आदि।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी की बहुत सी कहानियाँ 'सारिका' जैसी अंतर्देशीय पत्रिकाओं में छपी थीं। ये कहानियाँ समीक्षा जगत् में काफ़ी चर्चित रही हैं। इन कहानियों में राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना को उकेरने के साथ ही मानवीय चेतना को उजागर करने की कोशिश भी की गयी है। भाषा एवं शिल्प की दृष्टि से भी ये कहानियाँ सशक्त साबित होती है। बाद में सन् १९९२ में इन दोनों संग्रहों की कहानियाँ 'बहुचर्चित कहानियाँ' नाम से प्रकाशित की गई। इन कहानियों को पढ़कर हमें लगेगा नहीं कि ये कहानियाँ कि मलयालम भाषी ने लिखी हैं।

केरल के कहानीकारों में और एक प्रमुख नाम है गोविन्द शेनाई जी का। उन्होंने अपनी लघु कथाओं के माध्यम से समाज में छिपे उन काले करतूतों को हमारे सामने प्रस्तुत किया है, जिन्हें अक्सर लोग देखकर भी अनुदेखा करते हैं। उनकी व्यंग्य लघुकथाएँ केरल की प्रमुख पत्रिकाएँ जैसे संग्रथन, केरलज्योति, शोध पत्रिका आदि में छपती रहती है।

डॉ.एन.रामन नायरजी की कहानियाँ भी काफ़ी रोचक रही हैं। इनकी 'द्वादशी' संग्रह में कुल बारह कहानियां हैं। इन कहानियों में केरलीय जीवन की अंतरंग झाँकी हम देख सकते हैं। डॉ. रामन नायरजी हर एक को राजनैतिक एवं सामाजिक समता के अधिकार दिलाना चाहते हैं। उनकी कहानियों से इस बात की पुष्टि मिलती हैं उनका मानना है कि सामाजिक समत्व किसी का दान नहीं, अपितु वह उसका हक है जिसे चन्द लोगे ने अपनी मुट्ठी में बन्द रखा है।

१९९० के बाद दक्षिण में खासकर केरल में हिन्दी में कहानी लिखनेवालों की संख्या बढ़ गयी। सन् १९९० के बाद के कहानिकारों में प्रमुख हैं - प्रो.पी.कृष्णन, प्रो.जे.सुगन्धवल्ली और डॉ.जे.बाबू। इन लोगों की कहानियों में सन् १९९० के बाद केरल में हुई सामाजिक - राजनैतिक बदलाव को दर्शाया गया है।

प्रो.पी.कृष्णन की 'दूसरा पहलू और अन्य कहानियाँ' में कुल दस कहानियाँ हैं। ये कहानियाँ समकालीन जीवन की सबसे बडी प्रवृत्ति 'भोगे हुए यथार्थ' को उजागर करती है। इसमें नौकरी के लिए बंबई शहर में पहुँचे एक ग्रामीण युवक की कहानी है। वह सिर्फ़ दूसरों से ही नहीं बल्कि अपने खुद के भाई से भी धोखा खा बैठता है। 'तन्हाई' में एक ऐसे युवक की निहीह स्थिति एवं मानसिकता का वर्णन है, जो जीवन के कटु यथार्थ का सामना करने में असमर्थ है। वह घुट घुटव अपनी ज़िन्दगी जीता है और जीने की उम्मीद शेष न रहने पर खुदकुशी कर बैठता है। इस कहानी संग्रह की कहानियों के विषयवस्तु में विविधता है। एक ओर अकेलाप और वार्थक्य की कहानी कही गयी है तो दूसरी और पारिवारिक समस्यायें, नारी चेतना आदि इसके विषय बने। पी.कृष्णन जी की और एक विशेषता यह है कि उन्होंने उचित वातावरण की सृष्टि सुरुचिपूर्ण ढंग से किया है।

डॉ. जे.सुगन्धवल्ली की 'लेकिन' कहानी संग्रह में कुल सोलह कहानियाँ हैं। इन कहानियों में कहानिकार ने नारी जीवन की विभिन्न

केरल का हिन्दी अनुवाद साहित्य - उपन्यास....

ऐसे 'मौन संदर्भों' में आधुनिकता बोध के आलोक में परख कर एम.टी. ने 'रण्टामूषम' का सृजन किया है। उपन्यास के अनुवाद का विशेष सांस्कृतिक महत्व हैं। कथा एक प्रान्त की: ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त मलयालम के प्रसिद्ध उपन्यासकार एस.के.पोट्टेक्काट्टु का उपन्यास 'ओरु देशत्तिन्टे कथा' का अनुवाद 'कथा एक प्रान्त की' नाम से पी.कृष्णन ने किया हैं। यह पचास साल के उत्तर केरल के बदलते जीवन परिवेश का महाकाव्यात्मक उपन्यास है।

प्रो.एम.टी.वासुदेवन नायर के ही एक अन्य उपन्यास 'मंञ्ञु' का 'तुषार' नाम से श्रीमती हफसत सिद्दीकी ने किया है। कुन्नुकुषि कृष्णनकुट्टी ने सी.वी.रामन पिल्लै के मार्तांण्ड वर्मा का सफल हिन्दी अनुवाद किया। श्री.कृष्णन मेनन ने एम.टी.वासुदेवन नायर के 'नालुकेट्टु' का अनुवाद 'हवेली' नाम से किया। के.दामोदरन के उपन्यास 'नरकत्तिलनिन्नुस' का अनुवाद श्री.कृष्णशास्त्री ने किया, परन्तु उन्होंने शीर्षक 'पद्मावती' रखा।

हिन्दी में अनूदित मलयालम उपन्यासों के इस सर्वक्षण के संदर्भ में इस बात की ओर इंगित करना होगा कि कुल मिलाकर जिन कृतियों में आंचलिक बोलियों मुहावरों तथा विशिष्ट क्षेत्रिय आचार, रीति-रिवाजों आदि का आधिक्य है, उनका अनुवाद अपेक्षाकृत दुष्कर तथा श्रमसाध्य प्रतीत होता है।

प्राध्यापक, संस्कृत कॉलेज

महाकवि डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर और चिरजीव महाकाव्य

आशादेवी एम.एस.

सन् १९२४ को कोल्लम जिले के शास्तामकोट्टा गाँव में जन्म लेकर आजीवन साहित्य क्षेत्र में कर्मरत महा मनीषी है डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर। कवि, कहानीकार, नाटककार, आलोचक, उपन्यासकार एवं गवेषक के रूप में आप लब्ध प्रतिष्ठ है ही, 'चिरंजीव महाकाव्य' का सृजन करके आप महाकवि होने का श्रेय भी प्राप्त कर चुके हैं। आप एक कुशल चित्रकार भी हैं। भारतीय संस्कृति के उन्नायक एवं संपोषक नायर जी की रचनाओं पर काफ़ी समीक्षात्मक ग्रंथ एवं शोधकार्य संपन्न हुए हैं। 'केरल के हिन्दी साहित्य का बृहद इतिहास' लिखकर अपने अहिन्दी भाषी प्रांत केरल के विशाल हिन्दी साहित्य का परिचय दिया है जो आपके द्वारा किया गया महान प्रयास है।

'चिरजीव महाकाव्य' काव्य क्षेत्र में नायर जी की नवीनतम उपलब्धि है। संस्कृत साहित्य में महाकाव्य जो परंपराएँ दृष्टिगत होती है, उनमें से अनेक महापुरुषों की गाथा को एक सूत्र में बाँधने की जो परंपरा है, उसी आधार पर 'चिरजीव महाकाव्य' का सृजन संपन्न हुआ है। पुराणों में वर्णित सात चिरजीवियों की कथा को एक सूत्र में बाँधना स्वयं में एक कुच्छ साधना है। महाकाव्य का सूत्रवाक्य या प्रस्थान बिन्दु सात चिरजीवों पर आधारित इस श्लोक पर निर्भर है -

'अश्वत्थामा बलिव्यासो हनुमाश्च विभीषणः
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः।।'

डॉ. अर्जुन शतपथी का यह मानना है कि चिरजीव महाकाव्यः महाकाव्यों का महाकाव्य है, उचित ही है क्योंकि प्रत्येक चिरजीवि पर एक एक महाकाव्य लिखने की क्षमता है। भारत के सांस्कृतिक इतिहास में अनेक महापुरुषों के होते हुए भी इन सात चिरजीवों (अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य और परशुराम) को 'चिरजीव' संज्ञा प्रदान करने के संबन्ध में कवि का मानना है-

'जीवन हैं इनके महाद्भुत/इस कारण से नाम है चिरजीव
जिस स्वभाव से सहे प्रत्येक/उस बल से चमके चिरजीव'

आचार्य द्रोण के पुत्र रूप में अवतरित अश्वत्थामा अपनी प्रतिकार भावना एवं दुर्गुणों से ही चिरजीव बने हुए हैं -

'रहा अनाचार तुम्हारा जीवनाधार' तथा 'निज दुर्गुणों के कारण बना श्रुत चिरजीव'

अपने जीवन काल में प्रतिशोध की अग्निज्वाला बन पांडव कुल का सर्वनाश कर तथा बाद में शाप ग्रस्त होकर दर-दर भटकते रहे अश्वत्थामा अब भी मानव मन में ज़िन्दा है।

भक्तराज प्रह्लादजी के पौत्र और विरोचन के सुपुत्र दानवराज महाराजा बलि अपनी वचनबद्धता एवं सत्य निष्ठता के कारण चिरजीव हैं। इसलिए तो-

'अब केरल के जन वीर महाबलि का/प्रतिवर्ष सानन्द स्वागत करते हैं
अपने महोत्सव ओणम के अवसर पर/उनका आगमन शुभ दिन है हमारा।'

हिन्दु धर्म, संस्कृति की वेदकाल से आज तक की परंपरा एवं क्षमता की जो विश्वव्यापी स्वीकृति अक्षुण्णा है, वह महर्षि व्यास की ही देन

केरल की हिन्दी कहानी....

पहलुओं को कहानियों के ज़रिए हमारे सामने प्रस्तुत करने की कोशिश की है। इस कहानी संग्रह को केरल हिन्दी साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसमें कहानीकार ने अपनी निजी पारिवारिक ज़िन्दगी एवं पेशेवर ज़िन्दगी के अनुभवों से जुड़ी हुई कुछ घटनाओं का ज़िक्र कहानी के माध्यम से किया है।

आज उत्तराधुनिकता हिन्दी जगत् केलिए सुपरिचित है। केरल के कहानीकारों में उत्तराधुनिक होने का श्रेय हम डॉ.जे.बाबू को ही दे सकते हैं। उनकी ज़्यादहतर कहानियां उत्तराधुनिकता की समस्याएं के लिए हुए हैं। इनके 'नहबील' कहानी संग्रह के अंतर्गत आनेवाली - आज और आज के बाद में नौकरी की व्यस्तता के कारण या फिर और कमाने की चाह में अपने माता-पिता से अलग अमरीका जैसी विदेशी देशों में रहने वाले बच्चों एवं उनकी राह देखकर अंतिम साँसे वृद्ध सदन के चार दीवारी पर गुज़ारनेवाले माता-पिता की कहानी बताई गई है। 'तमस का शिकार' कहानी में कर्फ़्यू के दिन होनेवाली घटनाओं का चित्रण कहानीकार ने बहुत ही मार्मिक ढंग से किया है।

आज भूमंडलीकरण से संबंधित बहुत सी कहानियाँ निकली हैं। भूमंडलीकरण जितना मानव केलिए उपयोगी साबित हुआ उतना ही दोषपूर्ण भी साबित हुआ है।

हम देख सकते हैं कि स्वतंत्रता पूर्व कहानी की आदर्शवादी ढाँचे से निकलकर और हास्य-व्यंग्यपरक कहानियों से गुज़रकर आज केरल की हिन्दी कहानी भूमंडलीकरण और उत्तराधुनिकता जन्य प्रवृत्तियों तक पहुँच गयी है। वस्तुतः यह हिन्दी कहानी की विकास - यात्र का एक मुख्य पडाव है।

पुराने ज़माने में कहानी के कथ्य का दायरा कुछ सिमटा हुआ था। मगर आज उसका दायरा इतना विस्तृत हो गया है कि कहानी ज़िन्दगी की अनदेखी दिशाओं में घुसकर जिन्दगी की असलियत को दिखाने का माध्यम बन गयी है।

**कोण्ट्राक्ट लेक्चरर, हिन्दी विभाग,
केरला यूणिवेर्सिटी, कार्यवट्टम**

सौपर्णिका

पालोड वासुदेवन नायर (मलयालम कविता)
अनुवाद हिन्दी में - रमा उण्णित्तान

चन्दन बनो मैं
हर्ष छिटकाकर
मंद्र मधुर रागों का
मंत्र जाप जपकर मंत्र

छ सुगंधित तीर्थ छिटकाकर
नमित भाव से
तू सौपर्णिके
बहती आ प्रेमवाहिनी
देवि मूकाम्बिका के मुग्ध
संकीर्तनों की पल्लवि सुनती।

मानो विजन तटों में
कोई मनस्विनी विधुरा
अपना आत्मा की व्यथा
सुना रही है!

मेरे मन में
सिरावितानों में
तू बहती जाती है
मौन विषाद लेकर
तू मेरे राग बन कर

मेरे ताल-ताल बनकर
मेरे स्वर-स्वर बनकर
मेरे लय-लय बनकर
तू अविराम, अनुस्यूत
मुझमें उमड़-घुमडकर

क्या भर आती है,
भरकर आती है!
तू सदैव मेरे
मुग्ध तमें के चूम-चूमकर
क्या मधुर बना देती है।●

वसंत आया तो

मलयालम कविता-श्रीमती निर्मला राजगोपाल
अनुवाद - श्रीमती आर. राजपुष्पम

मेरे जीवन आराम में आयी एक दिन
अतिथि सी एक सुंदर तितली
माँगा मधुर मधु, चाँदनी रात की
फूल सी वर्षा की सुनहरी लहरों में।

प्यार का गीत सुनकर मेरे
मानस में मधुकण उमड़ आए
सुंदर सपनों के तट पर मेरे
मोहों की लहरें लहरा गयीं।

शत-शत नव सुमनों के तारे
बिखेरे उस राह पर मैंने
आतिरा रात में मैं उस गान गंधर्व की
वीणा की सुमधुर संगीत धारा बनी

वाह निंवृति का मोहक निमिष!
रंग-बिरंगे पंखों सा बन गया तो
जी भर पी लिया मैं ने जीवन
मधुपात्र का स्नेह मरन्द। ●

है। अष्टादश पुराणों की रचना करके मानव-राशि को आपने यह अमर तत्व पढ़ाया कि,

'परोपकार ही पुण्य है, पाप तो पर-पीडन।'

व्यास जी द्वारा प्रणीत सिद्धांत, साधनाएँ और सिद्धियाँ जब तक अमर रहेंगे तब तक आपके अमरत्व में कोई संदेह नहीं हो सकता।

श्री. हनुमान की अमरता उनकी रामभक्ति और संपूर्ण समर्पण के कारण हैं। हनुमान की प्रभुभक्ति को देखकर श्रीरामचन्द्र जी द्वारा दिये गये वरदान था कि - 'तुम रहो भूतल में चिरजीव होकर कल्पान्त तक' हनुमान जी चिरजीवों की पंक्ति में स्थान पाये।

राक्षसकुल में जन्म लेने के बावजूद भी अपनी धर्मनिष्ठता और सच्चरित्रता के कारण विभीषण चिरजीव बने हुए हैं। भ्राता-द्रोही, कुलध्वंसाभिलाषी जैसे विशेषणों से संबन्धित किये जाने के उपरान्त भी आपको चिरजीवी होने का आशीर्वाद श्रीराम से प्राप्त हुआ क्योंकि वे धर्मनिष्ठ थे। इस संदर्भ में प्रस्तुत पंक्तियाँ उल्लेखनीय है-

'जहाँ महाप्रतापी विश्व विजयी रावण/नहीं रहा चिरजीव सुखी स्वस्थ
वहाँ एक सत्वगुणी भाई रहा विश्व सम्राट/चिरजीव संसार का अनुकरण बन'

कृपाचार्य का स्वभाव पंडित एवं ज्ञानी होने पर भी धार्मिक नहीं था, उसमें स्वार्ध का अंश ज़्यादा था। आपके वचन और कर्म में अंतर था, फिर भी वे आचार्य बने हुए थे-

'वचन कर्म में रहा अन्तर/किया था वही जो नहीं था धर्म
किया था वही जिसे माना कुकर्म/साक्षी नहीं था मन, तो क्या आचार्य'

कृपाचार्य के स्वभाव की जो चंचलता है, वह प्रवृत्ति मानव मन में हमेशा बनी रहती है। अतः वे चिरजीव होकर आज भी ज़िन्दा रहते हैं।

परशुराम जी ने शास्त्र के रक्षार्थ शस्त्र उठाया था। अनेक धर्म-अधर्म और हिंसाएँ करने के बाद प्रायश्चित स्वरूप उन्होंने सर्वस्व दान कर दिया और केरल भूमि की सृष्टि की। कवि परशुराम का त्रेतायुग में श्रीराम से तथा द्वापर युग में श्रीकृष्ण से मिलन स्वीकार करते हुए कलियुग में भी उनकी स्मृतियों को ताजा अनुभव करते हैं-

'हमें विदित हैं श्री परशुराम से/त्रेतायुग में श्री रामचन्द्र से किया साक्षात्कार
द्वापर में हुई भेंट श्रीकृष्णा से कई बार/अब इस कलियुग में भी उनकी स्मृति ताज़ी है।'

डॉ. नायर जी भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता के अनन्य पूजारी हैं। विश्वमानवता की संकल्पना भी काव्य में दर्शनीय है - 'भारत में कभी न रहे युद्ध आगे।'

'नारी का अपमान अधर्म है' कहकर आपने नारी सम्मान की ओर बल दिया है-

स्त्री जनों का रोदन शोभा/नहीं देगा देश को, मौन क्यों?'

मुक्तछन्द में निबद्ध 'चिरजीव महाकाव्य' में डॉ.नायर जी ने महाकाव्य परंपरा का पूरा अनुसरण किया है। यह महाकाव्य भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा एवं मिथकों के प्रामाणीकरण का महाकाव्य है। यह समकालीन परिदृश्य को सामने रखकर भारत की भावात्मक और सांस्कृतिक एकता का आधार प्रस्तुत करता है।

उत्तर और दक्षिण के बीच एक सेतु सा कार्य करनेवाले डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर जी आज भी साहित्य क्षेत्र में वैसे ही विराजमान हैं जैसे शुरुआत में थे। आपकी यह साधना बहुत कम लोगों में ही विद्यमान है। ईश्वर से प्रार्थना है कि आपका महाकाव्य और आप युग-युगान्तर तक चिरजीव रहें।

शोध छात्रा, हिन्दी विभाग, कार्यवट्टम कैंपस

केरल की हिन्दी शोध एवं गवेषण साहित्य

डॉ.एस.सुनिलकुमार

हिन्दी भाषा और साहित्य में गवेषणा करने की दिशा में केरल का महत्वपूर्ण स्थान है। केरल के शोधों में बहुत से शोध, तुलनात्मक विषयों को लेकर हुआ है। हिन्दी और मलयालम के कवियों और साहित्यकारों की श्रेष्ठ कृतियों को लेकर, उनमें परस्पर साधर्म्य या समानतायें स्थापित करके इस प्रकार के तुलनात्मक शोधों ने भाषाओं, साहित्यों, प्रान्तों और संस्कृतियों की दूरी को पाट दिया है। देशीय एवं सास्कृतिक एकता की दिशा में भी इन शोधों और शोध ग्रंथों की उपोदयता सिद्ध हो चुकी है। इन शोध ग्रंथों और गवेषणा साहित्य के अध्ययन से यह बोध स्थिर होगा कि भारत एक है, और हम सब एक ही संस्कृति के रास्ते के पथिक हैं।

केरल विश्वविद्यालय से सन् २०१२ तक २०० शोध विषयों में उपाधि प्राप्त हो चुकी हैं। उनमें पचास प्रतिशत शोध ग्रंथ प्रकाशित भी हो चुके हैं। उपलब्ध सामग्री के अनुसार सन् उन्नीस सौ सतसठ में श्री.आर. रामन नंपूतिरी जी ने डॉ.एन.ई विश्वनाथ अय्यरजी के निदेशन में रीतिकालीन हिन्दी काव्य और उसकी सामाजिक पृष्ठभूमि विषय पर शोधकार्य का प्रारंभ, केरल विश्वविद्यालय में किया था। वहाँ से लेकर डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर जी, डॉ.ए.चन्द्रहासन जी, डॉ.एम.मलिक मुहम्मद जी, डॉ.एन.राम एलेड़म जी, डॉ.वेल्लायणि अर्जुन जी, ड़ॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी, डॉ.एच.परमेश्वरन जी, डॉ.एस.तंकमणि अम्मा जी, डॉ.एन.रवीन्द्रनाथ जी, डॉ.वी.पी.मुहम्मदकुंजु मेत्तर जी, डॉ.एन.सुरेशजी, डॉ.सी.पी.राजगोपालन नायर जी, डॉ.वी.वी.विश्वम जी, डॉ.एम.ए.करीम जी, डॉ.एस.क्रिस्तुदास चन्द्रन जी जैसे अनेकों कर्मठ निदेशकों के सशक्त निदेशन में सैकड़ों शोधार्थी केरल विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। नई पीढ़ी के शोध निर्देशक भी नये-नये और विविधता पूर्ण विषयों को लेकर शोधकार्य करने केलिए शोधार्थियों को प्रेरणा देते आ रहे हैं और केरल के हिन्दी गवेषणा साहित्य के लिए अनेक नये-नये ग्रंथों को प्रदान करत आ रहे हैं। समय की कमी के कारण उन सभी शोध निर्देशकों और शोध विषयों का उल्लेख करना यहाँ अनुचित समझता हूँ। सन् दो हज़ार बारह तक के केरल के सभी विश्वविद्यालयों के हिन्दी शोध संबंधी पूर्ण विवरण प्राप्त हैं। लेकिन पूर्ण रूप से उसे यहाँ प्रस्तुत नहीं कर सकता हूँ। डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर जी के सद्य प्रकाशित केरल के हिन्दी साहित्य का बृहद इतिहास नामक पुस्तक में उन सभी शोधों और शोधार्थियों का विवरण उपलब्ध हैं।

श्रीशंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय से सन् दो हज़ार बारह तक करीब बासठ शोधार्थी, शोध उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। वहाँ के शोध विषयों में भी काफी विविधता दिखाई पडती हैं। तुलनात्मक अध्ययन भी काफी हो चुके हैं।

महात्मागाँधी विश्वविद्यालय से २०१२ तक बावन शोधार्थियों ने शोधकार्य करके उपाधि प्राप्त की हैं। उन शोध ग्रंथों से कुछ पुस्तक रूप में प्रकाशित हो चुके हैं। दो हज़ार बारह तक कालिकट विश्वविद्यालय से करीब पचपन शोध प्रबन्ध प्रस्तुत हुए थे। उसी प्रकार कोच्चिन विश्वविद्यालय से भी एक सौ साठ शोध ग्रंथ प्रस्तुत हुए। केरल विश्वविद्यालय और कोच्चिन विश्वविद्यालय से हिन्दी गवेषणा साहित्य केलिए काफी उपलब्धियाँ प्राप्त हो चुकी हैं।

केरल के बाहर के विश्वविद्यालयों से भी हिन्दी में अनेक केरलीय शोधार्थी हुए। करीब साठ से पचहत्तर तक के शोध ग्रंथ अन्य विश्वविद्यालयों से केरलीय विद्धानों के शोध निकल चुके हैं। उनमें से अनेक ग्रंथ प्रकाशित भी हो चुके हैं। उनमें अधिकाँश ग्रंथों तुलनात्मक अध्ययन हैं। हिन्दी तथा मलयालम की समान शब्दावली - एक भाषा शास्त्रीय अध्ययन (अलीगढ विश्वविद्यालय से), पन्तकाव्य में बिंब योजना (उसमानिया वि.वि. से), डॉ. गणेश अय्यर का आधुनिक हिन्दी और मलयालम कविता में प्रेम - एक तुलनात्मक अध्ययन (मीरठ वि.वि. से), हिन्दी और मलयालम के आधुनिक खण्डकाव्य-तुलनात्मक अध्ययन (आग्रा वि.वि.से), वर्तमान हिन्दी तथा मलयालम कथा साहित्य (लखनऊ वि.वि. से), हिन्दी और मलयालम के दो सिंबोलिक प्रतीकवादी कवि (बिहार वि.वि. से) आदि। सभी ग्रंथों का नामोल्लेखन करना श्रमसाध्य और असंभव है। फिर भी विषय वैविध्य और सांस्कृतिक एकता को बनाए रखने में प्रस्तुत कृतियों ने जो योगदान दिया है वह इस अवसर पर स्मरणीय ही है। तुलसीदास और एषुत्तच्छन की तुलना, जयशंकर प्रसाद और कुमारनाशान के कालों की तुलना, तथा तमिल की छायावादी कविताओं की तुलना महादेवी वर्मा और बालामणिअम्मा की कविताओं की तुलना आदि अनेक गवेषण ग्रन्थ निश्चय ही उल्लेखनीय हैं। इस प्रकार देखें तो केरल राज्य से करीब आठ सौ से अधिक हिन्दी शोध प्रबन्ध प्रस्तुत हुए थे और केरल के हिन्दी साहित्य में गवेषणा साहित्य का भी बडा हाथ सिद्ध होता है। करीब पाँच सौ से अधिक गवेषण साहित्य ग्रंथ, विविध विषयों को लेकर हिन्दी में प्रकाशित हो चुके हैं। इस दिशा में, आगे भी कई उपलब्धियाँ होने की संभावना भी है।

इतना कहकर मैं अपना यह छोटा-सा प्रपत्र आपके सामने रखता हूँ।

धन्यवाद। यूनिवेर्सिटी कॉलेज

ये भी शोध-पत्रिका के सदस्य बने (१०४)

नाम : **डॉ. श्रीदेवी**

शिक्षा : एम.ए., पी.एच.डी. (हिन्दी)

सहप्राध्यापिका, हिन्दी विभाग, महात्मा गान्धी कॉलेज, त्रिवेन्द्रम

फोन : 9446710294

इ-मेल : lekhanaren12@yahoo.com

केरल का एकमात्र संपादकीय ग्रंथ - अवतरणिका ग्रंथ - आत्मकथा-साहित्य-ग्रंथ

डॉ.उषाकुमारी के.

केरल के प्रेमचन्द के नाम से प्रसिद्ध डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी का साहित्य सारी विधाओं पर विशाल आयाम में फैला पड़ा है, जिसमें उनकी भाषा की विधिवत् क्षमता भी दर्शनीय है। उन्होंने हिन्दी को अवलम्ब मान कर प्राप्त आज़ादी को बनाए रखने की कोशिश की है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए हिन्दी साहित्य का निर्माण करना शुरू किया, जिसके द्वारा सारे देश को अपना सन्देश दे सके।

देशीय संस्कृति और भावात्मक एकता को बनाए रखने के लिए उन्होंने 'केरल हिन्दी साहित्य अकादमी' की स्थापना की। उन्होंने अपनी आत्मकथा में इस संस्था के बारे में कई जगह चर्चा की है। डॉ. चन्द्रशेखरन जी ने अपनी आत्मकथा मलयालम भाषा में सन् २००७ ई. को प्रकाशित की थी। मलयालम भाषा में आत्मकथा का नाम 'अनन्तपुरियुम ञानुम' है। इस कृति का हिन्दी अनुवाद है - 'एक कर्मयोगी की आत्मकथा: भारत स्वतन्त्रता के रास्ता से'। इसे अनुवाद किया श्रीमती कौसल्या अम्माल ने। डॉ. चन्द्रशेखरन नायर जी की रचनात्मक सृजन की निरंतरता एक विशिष्ट वरदान जैसी लगती है। वे कल्पना - जगत में विचरण न करके जगत् एवं जीवन के साध संपृक्त रहते है। उनका विश्वास है कि निःस्वार्थ भावना से प्रेरित होकर मानव का कल्याण करना ही शाश्वत सत्य है। उनकी आत्मकथा यह स्थापित करना चाहती है कि भारत को स्वातंत्र्य प्राप्त हुआ हिन्दी भाषा के देशव्यापी प्रचरण से। गाँधी जी ने सारे देश को खादी और हिन्दी की ओर आकृर्षित करवाया। केरल के हिन्दी साहित्य में दूसरे विधाओं के साथ 'आत्मकथा' साहित्य भी जुड़ गया है। केरल की संस्कृति और साहित्यिक वैभव की गणना अब पूरे भारत में फैल चुकी है। यह सत्य है कि भक्ति दक्षिम से ही उत्तर की ओर गयी है। डॉ.नायरजी ने हिन्दी को स्वभाषा मानकर उसकी श्रीवृद्धि को लक्ष्य मानकर कठोर तपस्या की है। उन्होंने अपनी आत्मकथा का नामकरण स्वानुभव के बल पर किया था। - 'अनन्तपुरियुम ञानुम' - इसका अर्थ है, 'तिरुवनन्तपुरम और मैं'। जब वे पहले पहल इस छोटे से शहर में आये तब यह शहर शान्त और सुन्दर था। तब वे मामूली स्कूल में हिन्दी पंडित थे। पचास वर्षों के भीतर उन्होंने तिरुवनन्तपुरम का चेहरा बदलते देखा। जैसे-जैसे तिरुवनन्तपुरम का प्रभुत्व बढ़ता गया, वैसे वैसे ही नायर जी का अपना व्यक्तित्व भी बढ़ता गया। इस अर्थ में 'एक कर्मयोगी की आत्म-कथा: भारत स्वतन्त्रता के रास्ते में' - आत्मकथा-ग्रंथ विशेष पठनीय है। इस आत्मकथा में यह साफ नज़र आता है कि एक साधारण बालक अपने लिए एक उज्ज्वल भविष्य का संकल्प करता है, और उसके पूर्ति के लिए वह कठोर परिश्रम करता है, सच्चे मार्गों से, आत्मविश्वास के साथ। आखिर अपने सारे प्रयासों और प्रयत्नों की सफलता पर भी वे मन से हमेशा संतुलित रहे।

संपादकीय: केरल के हिन्दी साहित्य के इतिहास में बिलकुल नया अनुभव है कि यहाँ एक ग्रंथ ऐसा बने, जो साहित्य की विधाओं से संपादकीयों का एक एकत्रित संकलन पुस्तक रूप में प्रकाश में आये। इसका श्रेय भी डॉ. नायर जी को जाता है। उन्हीं का ग्रंथ है 'डॉ. नायर जी का संपादकीय'। इसका प्रकाशन काल सन् २००६ हैं। इसके संपादकीय 'केरल हिन्दी साहित्य अकादमी' के सन् १९९६ से लेकर २००५ तक के अंकों में आये संपादकीय लेख हैं।

विगत पच्चीस साल से डॉ नायरजी इस केरल हिन्दी साहित्य अकादमी का कार्य भार भी संभाल रहे हैं। अकादमी के मुख्य पत्र में विविध सवालों पर प्रकाश डालते हुए डॉ. नायर ने जो संपादकीय लेखन लिखे हैं उनका चयन इस ग्रंथ में इस देख सकते हैं। भारत की राजभाषा, धर्मनिरपेक्षता, धर्मपरिवर्तन की अवैधानिकता आदि विषयों पर उन्होंने अपने विचार व्यक्त किए हैं।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी की इस शोध-पत्रिका का लक्ष्य हिन्दी के माध्यम से यह साबित करना है कि भाषा अलग होते हुए भी केरल की संस्कृति भारत की संस्कृति का अभिन्न अंग है।

नायर जी ने अपने संपादकीय लेखन - दक्षिण में केरल ने ही हिन्दी को दिल से अपनाया है। यह विषय लिख कर यह साबित कर दिया कि आज केरल में सारा भारत समाया हुआ है।

अवतरणिका: यह विशेष उल्लेखनीय बात है कि केरल के हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत एक नयी विधा भी शामिल होती है जिसे अवतरणिका, पुरोवाक, भूमिका, आमुख आदि नामों के लेख, ग्रंथ-प्रकाशन के साथ जुड़े हुए शब्द है। लेकिन इसके लिए अलग ग्रंथ विरले ही तैयार होते हैं। डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी ने साहित्य की सभी विधाओं पर कलम चलायी है।

डॉ. नायर की 'अवतरणिकाएं' नामक ग्रंथ की प्रथम अवतरणिका सन् १९३७ में आगरा के साहित्य प्रकाशन मंदिर द्वारा प्रकाशित 'निबन्ध मणि' नामक ग्रंथ के लिए लिखी हैं। उस समय से लेकर अब २०१२ तक ५२ ग्रंथों के लिए अवतरमिकाऐं लिख चुके हैं। उनके उन्नीस अवतरणिकाऐं उनकी अपनी रचनाओं की भूमिका या प्राकक्थन के रूप से लिखी गई है, शेष अन्य रचनाकारों की रचनाओं के लिए लिखी गई अवतरणिकाऐं है। रचना के दौरान रचनाकार द्वारा अनुभूत मानसिक स्थितियों की गहराइयों में उतरकर कृति का अनुशीलन करने में थे अवतरणिकाऐं सक्षम निकली हैं। ऐसी अवतरणिकाओं से सुजरनेवाला पाठक आसानी से कृति का रसास्वाद प्राप्त कर सकता है। इस ग्रंथ में संकलित अधिकांश अवतरणिकाऐं इस कोटि की हैं।

डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर आज देश भर नहीं, अन्तर्देशीय स्तर पर भी जाने-माने उच्च-कोटि के साहित्यकार हैं। डॉ. नत्थनसिंह जी

१९९० के बाद के, केरल के हिन्दी साहित्य की गतिविधियाँ: एस अवलोकन

रीजा आर.एस.

आधुनिक हिन्दी साहित्य के सभी रूप केरल के हिन्दी साहित्य में भी प्राप्त हैं। काव्य नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध, आलोचना, जीवनी, आत्मकथा जैसी सभी विधाओं में १९९० के बाद के केरल के हिन्दी साहित्य ने अपने को पर्याप्त मात्रा में प्रतिष्ठित कर दिया है। इनके अतिरिक्त विभिन्न शास्त्र, दर्शन, व्याकरण, साहित्येतिहास, तुलनात्मक अध्ययन बालसाहित्य, समीक्षा, गवेषण, संपादकीय, अवतरणिका महाकाव्य जैसी विविध धाराओं में भी केरलीय हिन्दी साहित्य ने अपना करिश्मा दिखाया है। इसके अलावा डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर की औपन्यासिक रचना सीतम्मा का हिन्दी अनुवाद १९९३ में कवियूर शिवराम अय्यर ने किया।

काव्य साहित्य: केरलीय हिन्दी कवियों ने केरल में हिन्दी का एक काव्य वातावरण पैदा किया है। इस काव्य धारा को गतिशील करने में, डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर काफी प्रयास किया है। इस युग में प्रकाशित काव्य ग्रंथ निम्न है: केरल की हिन्दी कविताएँ (१९९४), कविताएँ देश भक्ति की (१९९३), निषाद-शंका (१९९८), चिरंजीव महाकाव्य (२००८); कवियूर शिवराम अय्यर, वनमाला (२००६); डॉ.एन.रवीन्द्रनाथ (रंग और गंध, १९९४); टी.एस.पोन्नम्मा (केरल प्रसून, १९९८); डॉ. प्रेमकुमारी (नकली, दुनिया, २००१); डॉ.जी. कमलम्मा (बेड़ा पार करना है, १९९९); आर.राजपुष्पम (काव्य सुमन, २००३), देशराग (२००९); टी.शिवनकुट्टी (चिदंबरा के चित्र, २००५); कौसल्या अम्माल (आज की सुबह, २००७), कौसल्या अम्माल की कविताएँ (२०११); जी.रवीन्द्रपिल्लै (भाव खुले फूल खिले, २००९); डॉ. मनु (हम इंतज़ार में हैं, २०१०); डॉ.एम.सी.सुवर्णलता (यादों में, २०१०), अखियान में काजल (२०११), मौन बोल रहा है (२०१०); टी.एल हेमलता (समय, २०११); टी.के.कुरियन (येशुचरित मानस, २०००); डॉ.पी.वी.विजयन (नदी को बहने दे, २००१); प्रो.कुन्नुकुषि कृष्णनकुट्टि (सुर-असुर, १९९४); रति सक्सेना (सपने देखता समुद्र, २००४) और माया महा ठगिनी (१९९९)।

मलयालम काव्यों का कतिपय अनुवाद निम्न प्रकार है: मलयालम के प्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती सुगतकुमारी का मलयालम काव्य राधा एविटे का हिन्दी अनुवाद डॉ.एम.जी.देवकी ने राधा कहाँ है (१९९६) नाम से किया है। जे.आर.बालकृष्ण पिल्लै (केशवीयम, १९९२), इलन्तूर राघवन नायर (चन्द्रोत्सव, १९९२), कवियूर शिवराम अय्यर (त्रिवेणी, १९९२), डॉ.एस.तंकमणि अम्मा (गोत्रयान, १९९५), स्वयंवर (१९९७), डॉ. रति सक्सेना (नैवेद्य, १९९६), अय्यप्प पणिक्कर की कविताएं (१९९७), अपूर्ण और अन्य कविताएं (२००१) आदि उल्लेखनीय हैं।

नाटक साहित्य: केरल के हिन्दी साहित्यकारों ने नाटक लिखने का भी साहस किया। केरलीय हिन्दी नाटक रचयिताओं द्वारा जो रचनाएँ निकली हैं वे प्रायः हिन्दी नाटक साहित्य में स्थान पाने योग्य हैं। १९९० के बाद के केरल के हिन्दी नाटककारों में ए.सदानन्दन (किष्किन्धेश्वरी, २००७), सोमन नायर (इतिश्री, १९९०), ईहामृगा, आदि ख्याति प्राप्त नाटककार हैं। प्रस्तावित कार्य के पहले का नाटक साहित्य केरल की रचनाओं में सशक्त विधा के रूप में धारण कर चुका था। डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर का कर्तृत्व स्तुत्य रहा था।

उपन्यास साहित्य: १९९० के बाद के केरल के हिन्दी साहित्यकारों द्वारा लिखित मौलिक उपन्यासों में के.सी. अजयकुमार के सूर्यगायत्री (२०१०), कालिदास (२०१२) आते हैं। अनूदित उपन्यासों की श्रेणी में डॉ. एस. मणि के दूसरी बारी (१९९८), डॉ. रति सक्सेना का रस्सी (१००८), टी.के. भास्करवर्मा के आवास (२००१), वी.डी.कृष्णन नंपियार का वृक्ष पर ईश्वर का साक्षात्कार आदि आते हैं।

कहानी साहित्य: १९९० के बाद के केरल के हिन्दी मौलिक कहानीकारों में डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर (बहुचर्चित कहानियाँ, १९९८), कृष्णन नंपूतिरी (रघुवंश की कहानियाँ, २००३), सुगन्धवल्ली (लेकिन, २००४), प्रो.पी.कृष्णन (दूसरा पहली और अन्य कहानियाँ, २००९) आदि उल्लेखनीय हैं। मलयालम से हिन्दी में अनूदित कहानियों में डॉ. रति सक्सेना के चुनिन्दा कहानियाँ, २००८), कारूर की श्रेष्ठ कहानियाँ (२००४), संतोष अलक्स के देहान्तरम (२००४), अशोक के कल की बारिश (२००४), सुधा बालकृष्णन के कमलादास की श्रेष्ठ कहानियाँ आदि उल्लेखनीय रचनाएँ आती हैं।

निबन्ध साहित्य: १९९० के बाद केरलीय हिन्दी लेखकों द्वारा निबन्ध साहित्य में ललित निबन्ध को कुछ उपलब्धियाँ प्राप्त हुईं. इसमें डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के डॉ. नायर की साहित्यिक रचनाएँ (निबंध साहित्य, १९९३), गाँधीजी भारत के प्रतीक (१९९८), प्रो.पी.कृष्णन के व्यावहारिक हिन्दी निबन्धावली (२००२), डॉ.के.श्रीलता के चिन्तन के कुछ पडाव (२००२), कबीर नये तथ्य और नये निष्कर्ष (२००२), हिन्दी साहित्य

ने डॉ. नायर जी के बारे में जो लिखा है। बिलकुल सही है - 'डॉ. चन्द्रशेखर जी के व्यक्तित्व की तस्वीर उभरकर आती है, उनकी विशेषताऐं हैं - वह उत्कृष्ट कोटि के देश-भक्त हैं। गत पाँच दशकों में हिन्दी क्षेत्र में अनेक उत्कृष्ट लेखक साहित्य मंच पर उदित हुए हैं। लेकिन बहुत कम लेखक उन राष्ट्रीय तथा लोकोन्मुख मानदण्डों का स्पर्श कर पाए हैं, जिनका साहित्य के साथ गहरा संबन्ध प्रेमचन्द ने जोड़ा है। किन्तु डॉ. नायर के साहित्य का अध्येता, विश्वास के साथ कह सकता है कि केरल के इस हिन्दी लेखक ने यह कार्य अवश्य पूरा कर दिया है। डॉ. चन्द्रशेखरन नायर की, यह अभूतपूर्व ऐतिहासिक विशेषता है।'

प्राध्यापिका, एम.जि.कॉलेज, त्रिवेन्द्रम

और राष्ट्रीय समन्वय (२०१०) आदि इस काल के प्रसिद्ध ललित निबन्ध है।

शास्त्र संबन्धी साहित्य: १९९० के बाद के केरलीय हिन्दी साहित्यकारों द्वारा शास्त्र संबन्धी साहित्य का भी विकास हुआ। डॉ. गोपिनाथन (अनुवाद सिद्धान्त और प्रयोग, १९९०), अनुवाद की समस्याएँ (१९९३), डॉ.मोहन (आत्मनिर्वासन और मोहन राकेश का साहित्य, २००८), डॉ. प्रमीला के.पी. (भाषान्तरण भावान्तरण, २००७), डॉ.सी.जे.प्रसन्नकुमारी भाषा साहित्य और संस्कृति: चिन्तन के कण (२००७), डॉ. सी.जे. प्रसन्नकुमारी और श्रीमती आर.आई.शान्ति मिलकर (राजभाषा हिन्दी के बहुमुखी आयाम, २००९), डॉ.जार्ज कुट्टी वट्टोत्त (वैज्ञानिक पहेलियाँ, २००७) आदि इस धारा के शास्त्र संबन्धी रचनाएं हैं। इसके साथ कोशों का निर्माण भी हुआ। डॉ. गोपिनाथन नायर (तुलनात्मक साहित्य विश्वकोश, २००८), प्रो.के.के.कृष्णन नंपूतिरी (हिन्दी-अंग्रेज़ी-मलयालम शब्द कोश, १९९०), प्रो.पी.कृष्णन (मलयालम-हिन्दी शब्दकोश, २००५), हिन्दी-मलयालम-अंग्रेज़ी शब्द कोश (२०१०), डॉ.मावेलिक्कर अच्चुतन (हिन्दी-अंग्रेज़ी-मलयालम शब्दकोश, २०११), आदि प्रमुख हैं।

आलोचना साहित्य: १९९० के बाद के केरल के लेखकों द्वारा लिखित आलोचना साहित्य की उपलब्धि अन्य विधाओं की उपलब्धियों से अधिक महत्वपूर्ण है। डॉ. आरसु (मलयालम साहित्य परख और पहचान, १९९७), हिन्दी साहित्य सरोकार और साक्षात्कार (२००४), भारतीय साहित्य ऊर्जा और उन्मेष (२००९), डॉ. सुवर्णलता एमयसी (मानक हिन्दी संरचना: स्वरूप एवं विश्लेषण, २००४), डॉ. प्रमीला पी. (औरत की अभिव्यक्ति एवं आदमी का अधिकार, २००४), स्त्री मुक्ति और कविता (२००६), कविता का स्त्रीपक्ष (२००८) पौनिकता बनाम आध्यात्मिकता (२०१०), स्त्री अस्मिता और समकालीन कविता (२०१०), श्रीमती के वत्सला किरण (पिंगल का अध्ययन, २००२), हरीन्द्र शर्मा (हिन्दी और कोंकणी भाषाएँ, २०११), डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर (गंगा और हरिद्वार, २०११), चिरंजीव महाकाव्य (२००९), डॉ.सुधा बालकृष्णन (हिन्दी साहित्य में रुढिमुक्त स्त्री, २०१०), डॉ. प्रमेद कोवप्रद (हिन्दी कविता का तापमान, २०११), भारतीय जीवन मूल्य और ज्ञानपीठ पुरस्कृत हिन्दी कवि (२००३), तत्तोत्तु बालकृष्णन (अनुवादक) - अध्यात्म, आत्मविधा वागभटानंद (२००९), डॉ. गोपिनाथन (विश्व भाषा हिन्दी की अस्मिता, २००८), डॉ. देवकी (वेब आफ लैंग्वेजस, २००७), आधुनिक साहित्य के कुछ हस्ताक्षर (१९९५), डॉ.एन.मोहन (अन्तरशती का हिन्दी उपन्यास, २००४), समकालीन हिन्दी कहानी (२००७), आलोचना के आयाम (२००८), डॉ.के.वनजा (माखनलाल चतुर्वेदी की रचनाओं में मानव मूल्य, १९९५), हिन्दी उपन्यास आज (२००७), डॉ. विश्वनाथ अय्यर (सीढ़ी और सांप, १९९६), मुहम्मद कुंज मेत्तर (शान्तिवाहक नबी, १९९५), तक्खिनी हिन्दी भाषा और साहित्य विकास और दिशाएँ (१९९४), डॉ.पी.जे.शिवकुमार (उपेन्द्रनाथ अश्क के नाटक, २०००), डॉ.बाबू जोसफ (स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में अलगाव बोध, २००२), डॉ.के.सी.अजयकुमार (स्वातंत्रता आन्दोलन पर आधारित हिन्दी उपन्यास, १९९९), डॉ.ए.अरविन्दाक्षन (हिन्दी उपन्यासों के विकास में कवियों की देन, १९९७), डॉ.रति सक्सेना (बालामणि अम्मा की काव्य कला और दर्शन, २००३) आदि ख्याति प्राप्त आलोचनात्मक रचनाएं हैं।

साहित्येतिहास संबन्धी: १९९० के बाद केरल के हिन्दी साहित्यकारों द्वारा साहित्येतिहास संबन्धी रचनाओं का निर्माण भी हुआ। डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के केरल के हिन्दी साहित्य का बृहत इतिहास (संक्षिप्तीकरण: श्रीमती छाया श्रीवास्तव, २००५), डॉ.जार्ज कुट्टी वट्टोत्त के कहानी की कहानी (हिन्दी कहानी का संक्षिप्त इतिहास) आदि इस धारा के उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। सन् २०१२ में डॉ.चन्द्रशेखरन नायर का केरल के हिन्दी साहित्य के बृहद इतिहास, जो भारत सरकार के धन से निर्मित है, एक मार्मिक साहित्यिक इतिहास है।

बाल साहित्य: १९९० के बाद के केरलीय हिन्दी लेखकों ने बालसाहित्य के निर्माण की दिशा में भी उल्लेखनीय प्रयास किया है। बाल साहित्य के निर्माण के बारे में डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी का शब्द इस प्रकार है - बच्चों केलिए साहित्य रचना करना अपेक्षाकृत कठिन कार्य है। उसमें प्रतिपाद्य विषय तथा भाषा आदि पर विशेष ध्यान देना होता है।[३] इस धारा में प्रो. के.के.कृष्णन नंपूतिरी के गणित का जादूगर (१९९०) और रघुवंश की कथाएँ विशेष उल्लेखनीय हैं।

दार्शनिक साहित्य: १९९० के बाद के केरलीय हिन्दी लेखकों ने शुद्ध-दार्शनिक एवं तत्वादर्शन संबन्धी साहित्य का भी सृजन किया है। प्रो.के.के.ष्णन नंपूतिरी के ईश्यापस्योपनिषद् (संस्कृत व्याख्या का हिन्दी अनुवाद, २०१२), डॉ. के.वनजा के साहित्य का पारिस्थिक दर्षन (२०११), डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के श्री ललिता सहस्रनाम की व्याख्या (२००१) आदि इस धारा की श्रेष्ठ रचनाएँ हैं।

जीवनी साहित्य: १९९० के बाद के केरलीय हिन्दी साहित्यकारों ने जीवनी साहित्य में भी सक्रिय काम किया। इसमें डॉ. जार्जुकुट्टी वट्टोत्त (फूलों का हार, २००४), हिन्दी के प्रमुख एक सौ साहित्यकारों की संक्षिप्त जीवनी), डॉ. मावेलिक्करा अच्चुतन (गांधी बाबा (२००२), डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर(चित्र कला सम्राट राजा रविवर्मा), आदि उल्लेखनीय रचनाकार हैं। चित्रकला सम्राट राजा रविवर्मा नामक पुस्तक ने केन्द्र सरकार की ओर से एक लाख रुपये का पुरस्कार पाया है।

गवेषण साहित्य: हिन्दी में गवेषणा करने की दिशा में केरल एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस छोटे से हिन्दीतर भाषी प्रदेश में १९९० के बाद आज तक पाँच सौ से अधिक शोधार्थियों ने डॉक्टर उपाधि प्राप्त की है। केरल विश्व विद्यालय कोच्चिन विश्वविद्यालय, श्री. शंकराचार्य विश्व विद्यालय, महात्मा गाँधी विश्व विद्यालय दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, केरल हिन्दी प्रचार सभा आदि के द्वारा केरल में सुचारु रुप से हिन्दी गवेषणा और गवेषणा साहित्य आगे बढ़ रहे हैं। देश की एकता की समस्या एक हद तक गवेषण साहित्य से हल हो सकती है। डॉ. स्टेल्लम्मा सेव्यर के हिन्दी के रामभक्त कवियों की सामाजिक चेतना (२००९), डॉ.के.सी.सिन्धु के रामकथा कालजयी चेतना (२००७) जैसे अनेक शोध-ग्रंथ इस धारा की उपलब्धियाँ हैं।

तुलनात्मक साहित्य: १९९० के बाद के केरल के हिन्दी साहित्यकारों ने तुलनात्मक साहित्य के महत्व को स्वीकार किया है।

उन्होंने तुलनात्मक साहित्य पर आधारित आलोचनात्मक ग्रंथों का निर्माण भी किया। डॉ. के.वनजा के तुलना और तुलना (२००१) इसका उदाहरण है। इसमें तुलनात्मक साहित्य की समस्याएँ, राष्ट्रीय भावनात्मक एकता का तुलनात्मक अध्ययन, हिन्दी और मलयालम के अनेक कवियों के बीच का तुलनात्मक अध्ययन आदि की चर्चा हुई है।

व्याकरण संबन्धी साहित्य: १९९० के बाद के केरल के हिन्दी लेखकों ने व्याकरण साहित्य में भी सक्रिय काम किया। प्रतो.के.के.कृष्णन नंपूतिरी के हिन्दी व्याकरण (१९९६), व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण: एक नया अनुशीलन (२००२), ए न्यू अप्रोच टु दि हिन्दी ग्रामर (१९९२), प्रो.जयचन्द्रन के कैरली हिन्दी व्याकरण (२००६), हिन्दी ग्रामर (२००६), साम्यक हिन्दी व्याकरण (२००७) आदि इस धारा की श्रेष्ठ उपलब्धियाँ हैं।

आत्मकथा साहित्य: आत्मकथा साहित्य के निर्माण और अनुवाद में भी १९९० के बाद के केरल के हिन्दी साहित्य संपन्न है। श्रीमती कौसल्या अम्माल द्वारा मलयालम से हिन्दी में अनूदित एक कर्मयोगी की आत्मकथा: भारत-स्वतंत्रता के रास्ते से (२०११) का आत्मकथाकार डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी हैं। इसमें अनुवादक श्रीमती कौसल्या अम्माल, डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के बारे में अपनी कलम से लिखती है - संस्थाएँ बनाई, उनके संचालन में जागरूक रहे। सब सफल परिणामों को वे देख सके। आखिर अपने सारे प्रयासों और प्रयत्नों की सफलता पर भी वे मन से हमेशा संतुलित रहे। अब वह इस योग सिद्धि के अनुभवी होकर यात्रा कर रहे हैं। गीता और महाभागवत् के आत्मतत्व पर अरूढ होकर शान्त जीवन के रास्ते पर हैं यही तत्व दर्शाता है आत्मकथा का मैं प्रकरण। एक सफल जीवन की जीवन यात्रा की आत्मकथा।[४] यह आत्मकथा हमारे यहाँ के साहित्य की प्रथम उपलब्धि है।

समीक्षा साहित्य: १९९० के बाद के केरल के हिन्दी साहित्यकारों द्वारा समीक्षा साहित्य का भी विकास हुआ। डॉ. वनजा के समीक्षा का साक्ष्य (२००८) इस धारा के उत्तम रचना है। इस ग्रंथ में अनेक विषयों का संकलन और अनेक साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन भी है। यह समीक्षा साहित्य का एक पठनीय ग्रंथ है। पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित समीक्षात्मक रचनाओं के द्वारा यह साहित्यिक विधा आगे की ओर बढ़ रही है।

संपादकीय साहित्य: संपादन एक विशिष्ट कला है। यह केरलीय हिन्दी साहित्य की गति-विधि का एक प्रमुख्र अंश है। १९९० के बाद भी केरल की कुछ प्रमुख्र हिन्दी पत्रिकाओं में संपादकीय द्वारा ऐसी लेखन सामग्री प्राप्त हुई हैं। विषय के महत्व और प्रतिपादन की गंभीरता के कारण यह महत्वपूर्ण साहित्यिक विधा है। डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर के डॉ. नायर जी का संपादकीय (२००६) इस धारा की उपलब्धि है। उनके संपादकत्व के बारे में बालमोहन तंपी जी कहते हैं - भारत के भीतर केरल का एक विशिष्ट स्थान है और महत्व है। वह अपनी विशेष काबिलियत को कई सन्दर्भों में प्रकट भी कर चुका है। आज केरल में सारा भारत समाया हुआ है।[५] एक सफल संपादक के रूप में साहित्य जगत् में डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जाने जाते हैं।

अवतरणिका साहित्य: १९९० के बाद के केरल के हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि है अवतरणिका साहित्य। यह हिन्दी साहित्य की विधाओं में एक अपूर्व विधा है। डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर द्वारा लिखित अवतरणिकाएँ (२०११) इस धारा की एकमात्र उपलब्धि है। इस ग्रंथ की भूमिका में डॉ.एस.तंकमणि अम्मा जीने इस प्रकार लिखा है - डॉ.नायर जी की अवतरणिकाएं भिन्न-भिन्न अन्दाज़ की हैं। कतिपय अवतरणिकाएँ कृति की गहराई से स्पर्श करनेवाली हैं। रचना के दौरान रचनाकार द्वारा अनुभूत मानसिक स्थितियों की गहराइयों में उतरकर कृति का अनुशीलन करने में ये अवतरणिकाएँ सक्षम हैं।[६] इस विधा में अन्यत्र ग्रंथ नहीं मिलता है।

केरल का हिन्दी साहित्य गतिशील और प्रौढ है। यहाँ के हिन्दी साहित्यकारों ने अपने-अपने योगदान से अपनी सृजन क्षमता दिखायी है। हर केरलीय इस पर गर्व कर सकता है।

सन्दर्भ सूची (दो पृष्ठों में संदर्भ सूचि प्राप्त है। स्थानाभाव से यहां देना मना है - सम्पादक)

१. श्रीमती कौसल्या अम्माल, कौसल्या अम्माल की कविताएँ, पृ.४
२. डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, मलयालम काव्य में गंगा और हरिद्वार का प्रतिपादन, पृ.४२
३. डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, केरल हिन्दी साहित्य का बृहद इतिहास, पृ.२७६
४. श्रीमती कौसल्या अम्माल (अनुवादक), एक कर्मयोगी की आत्मकथा: भारत स्वतंत्रता के रास्ते से, पृ.९
५. डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, डॉ.नायर जी का संपादकीय पृ.५
६. डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर द्वारा लिखित अवतरणिकाएँ, पृ.१०.

सहायक ग्रंथ सूची:

१. कौसल्या अम्माल की कविताएँ, श्रीमती कौसल्या अम्माल, प्रकाशक: केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, तिरुवनन्तपुरम, संस्करण, २०११.
२. मलयालम काव्य में गंगा और हरिद्वार का प्रतिपादन, डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, प्रकाशक: यवनिका पब्लिकेशन, तिरुवनन्तपुरम, संस्करण, २०११
३. केरल हिन्दी साहित्य का बृहद इतिहास, डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, प्रकाशक: केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, तिरुवनन्तपुरम, संस्करण: १९८९
४. एक कर्मगोयी की आत्मकथा: भारत स्वतंत्रता के रास्ते से, आत्मकथाकार: डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, अनुवादक: श्रीमती कौसल्या अम्माल, प्रकाशन: केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, तिरुवनन्तपुरम, संस्करण: २०११
५. डॉ. नायर जी की संपादकीय, डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, प्रकाशक: केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, तिरुवनन्तपुरम, संस्करण: २००६
६. डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर द्वारा निखित अवतरणिकाएं, जॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, प्रकाशक: केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, तिरुवनन्तपुरम, संस्करण:२०११

शोध छात्रा, केरल यूनिवेर्सिटी लाइब्रेरी

सरोकार

कहानी

मनीषकुमार सिंह

दफ्तर आकर सीट पर बैठा ही था कि रॉबिन की बीमारी के बारे में पता चला। सेन्ट स्टीफेन्स में भर्ती था। लोगबाग के चेहरों पर छायी संजीदगी स्थिति की गम्भीरता का सहज परिचय दे रही थी। मैं भी उठकर सबके निकट आ गया। "भई क्या बात हो गयी"। मुझे मालूम था कि महीने भर पहले भी कुछ ऐसा ही हुआ था। तब वह हफ्ते भर ऑफिस नहीं आया था। लौट तो लगा कि शायद अब सब कुछ ठीक-ठाक है। लेकिन ऐसा नहीं था। दरअसल पहले के लक्षण आने वाले समय की आहट थी।

यार रॉबिन को विजयन देख्र कर आया है। बता रहा था कि आई.सी.यू में एडमिट है। जवाब मिला। अच्छा! मैं थोड़ा समझते में आ गया। आगे की सूचना और भी संगीन थी। बेचारे का लीवर ख्राब हो गया है। हॉ...! हॉ भई इंसान की जिन्दगी का कुछ कहा नहीं जा सकता। महिलाएँ अपनी-अपनी जगहों से सर और गर्दन घूमा कर सारी बातें ध्यान से सुन रही थीं।

मेरे बराबर वाली सीट पर बैठता था। हालॉकि सन्निकट होने के बावजूद उसका और मेरा ग्रूप अलग था। लेकिन कभी-ख्रभार हम दोनों ने एक दूसरे से मॉग कर सिगरेट पीए थे। आदमी शरीफ था। शिगरेट पीने हमेशा कमरे से बाहर जाता। गालियाँ देने ही तो केवल मौजूदा सरकार को देता। बाकी सभी के प्रति शिष्ट लहजे का प्रयोग करता। मुझे याद है जब कुछ महीने पहले मेरी वाइफ की बड़ी बहन का देहान्त हुआ था तो कुछ दिनों के लिए मैं आउट ऑफ स्टेषन था। लौटकर दफ्तर ज्वाइन करते ही सबसे पहले रॉबिन मेरे पास आया और बड़े ही आत्मीय तरीके से सांत्वना दी।

आदमी अच्छा है। इस विषय पर आम सहमति थी।

पड़ोस के सेक्शन का विजयन रॉबीन का दोस्त था। दोनों एक ही कार-पूल में थे। हसबैण्ड-वाइफ की डबल इन्कम वाले कार मैनेज कर सकते थे। वह मेरे सेक्शन के भी चन्द चुने हुए लोगों को लेकर सेन्ट स्टीफेन्स जा रहा था। मुझसे आकर बोला, "अगर आपने मुझे पहले बताया होता तो आपको एडजस्ट कर लेता"।

"लेकिन मुझे क्या मालूम भाई कि तुम जा रहे हो"। मेरी आजिजी स्वाभाविक थी।

चुने लोगों में विजयन के उसके सेक्शन का सेक्शन ऑफिसर, मेरे कमरे की दो महिलाएँ और दो पुरुष शामिल थे। अब मारुति में इससे ज्यादा नहीं आ सकते। मैं बस जरा सा से रह गया था। ख्रैर अगली बार इसी की गाड़ी से चल कर देख्र आऊँगा।

लंच के बाद ढाई बजे लोग चले गए। तय यह हुआ था कि उधर से ही सभी अपने-अपने घर चले जाएगे। इस सुविधाजनक कार्यक्रम को सभी ने ध्वनिमत से स्वीकार कर लिया।

कमरे में लोगों की संख्या घट गयी। बचे लोग अभी भी इसी विजय पर वार्तालाप जारी रख्रना चाहते थे। चलो फिर हम भी कभी देख्र आएगे। ऐसा कहकर अन्त में विषय पर चर्चा समाप्त हुई।

एक हफ्ता गुजर गया। मैं दो-एक बार विजयन से कॉरिडोर में आते जाते मिला। उससे दुबारा सेन्ट स्टीफेन्स जाने के इरादे के बारे में जानना चाहा। एक बार तो उसने व्यस्तता की बात कही। दूसरी बार बताया कि अब रॉबिन ऑल इंडिय़ा में शिफ्ट हो गया है। अच्छा। मेरे मुँह से इतना निकला।

सेक्शन में चिकित्सा-व्यवस्था एवं स्वास्थ्य सुविधाओं पर परिचर्चा चल रही थी।

"न जाने हम लोगों के अन्दर मेन्टल ब्लॉक क्यों होता है कि सरकारी हॉस्पिटल में इलाज ठीक नहीं होता", विरमानी कह रहा था, "यार प्राइवेट वाले केवल पैसे बनाते हैं"।

"यू आर राइट"। एक अन्य ने उसका समर्थन किया। फिर समर्थक ने मिसाल भी प्रस्तुत की। "मेरी मदर की ऑख्र का ऑपरेशन था। मैं प्राइवेट इलाज करवा रहा था। सालों ने आँख्र करीब-करीब चौपट कर दी थी। अन्त में बोले हमसे नहीं होगा। कहीं और ले जाओ। मैं तो बॉस कॉलर पकड़ने वाला था"। बताते-बताते वह क्रोधित हो उठा। फिर? जिज्ञासुओं ने पूछा।

"यार फिर ऑल इंडिया ले गया। पहले तो उन लोगों ने एडमिट करने से ही मना कर दिया। फिर मैंने सिसेर्स भिड़ाया। वहाँ एक लेडी ड़क्टर थी। बड़ी अच्छी थी बैचारी। उसने कहा कोर्निया पर कैलशियम जम गयी है। ठीक उन्होंने ही किया। मैंने बेकार में प्राइवेट के चक्कर में हज़ारों बरबाद किए"। पूरी कहानी सुनकर विजयन ने रहस्योघाटन किया कि रॉबिन के भी अब तक अस्सी हजार लग चुके हैं। क्या...! प्रतिक्रियाओं में आश्चर्य और हमदर्दी थी। हाँ यार इसमें से पच्चीर परसेंट भी गर्वनमेंट से रिइम्बर्स हो जाए तो गनीमत समझो।

भई वहाँ तो ए.सी.का चार्ज लेते हैं। सहानुभूति का एक और स्वर उभरा। ऑल इंडिया ऑफिस से ज्यादा दूर नहीं था। मैंने सोचा कि एक दिन ऑफिस टाइम में बस से देख्र आऊँगा। स्टॉफ कार तो बस अफसरों की ख्रातिर है। लेकिन सोच साकार रुप में कभी दल नहीं पायी। दो हफ्ते बाद विजयन ने बताया कि रॉबिन की तबियत अब सँभल गयी है। शायद अगले हफ्ते डिसचार्ज कर दिया जाए। शुक्र है भगवान का! कुछ जोड़ी हाथ ा तरफ उठे।

घर आ जाने के बाद भी रॉबिन ने दफ्तर ज्वाइन करने में एक महीने का समय लिया। दोपहर के डेढ़ बजे लंच टाइंस में अचानक उसे बैठा देख्कर मैं चौंका। वह हालचाल पूछने वालों के प्रश्नों का जवाब दे रहा था। मैं तुरन्त पहुँचा - "कैसे हो भाई"।

"बस कृपा है आप सब की"। वह प्रयत्न रके मुस्कराया। कमजोरी साफ दिख्रायी दे रही थी।

मूल्यांकन

राजेन्द्र परदेसी की कहानियाँ
वर्तमान समाज का आईना

ओमप्रकाश कादयान

राजेन्द्र परदेसी भारत के उन अग्रणी साहित्यकारों में से एक हैं जो पत्र-पत्रिकाओं में निरन्तर छपके रहते हैं। उनके द्वारा लिये गये वरिष्ठ साहित्यकारों के साक्षात्कार हों या कविताएं, कहानियां, हाइकू, लघुकथाएं या अन्य विधाओं की रचनाएं, अक्षर पत्रिकाओं या समाचार पत्रों में छपते रहते हैं। ये एक अच्छे कलाकार भी हैं। शायद ही कोई स्तरीय पत्रिका या पत्रिकाओं के विशेषांक हो जिनमें इनके रेखांकन न छपे हों। यायावर प्रवृत्ति वाले परदेसी स्वभाव से जितने शालीन व्यवहारिक, मृदुभाषी व सहयोगी हैं, कर्म से भी उतने ही। इनकी करनी व कथनी में अन्तर नहीं है। इसलिए इनके आन्तरिक गुण इनके साहित्य में भी झलकते हैं। सदा दूसरों का ख्याल रखने वाले साहित्यकार राजेन्द्र परदेसी की विभिन्न विधाओं-कहानी, कविता, साक्षात्कार, हाइकू, लघुकथा, निबन्ध आदि पर आठ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा हजारों रेखांकन छप चुके हैं।

देश की अनेक सरकारी, गैर सरकारी साहित्यिक व सांस्कृतिक संस्थाओं से सम्मानित हो चुके राजेन्द्र परदेसी की कहानी 'सांचि परितिया हमार' पर भोजपुरी फिल्म भी बन चुकी है। राजेन्द्र परदेसी एक संवेदनशील लेखकन हैं तथा समाज व अपने लेखकीय धर्म के प्रति सजग रहते हैं। इसलिए समाज की छोटी-छोटी घटनाएं भी उन्हें प्रभावित करती हैं और इनके अन्दर का लेखक कलम उठाकर उन घटनाओं को कहानी का रूप दे देता है। इनकी चेतना गहरी है तथा ये यथार्थ का चित्रण करने में सक्षम हैं। ये विसंगतियों और सामाजिक कुसंस्कारों का चित्रण भी करते हैं। इनकी कहानियों में शहर की घुटन, व्यवस्तताओं, स्वार्थ परायणता के साथ-साथ गांव की जमीन, उनके विखण्डित होते मूल्यों तथा बदलते परिवेश का सजीव चित्रण है। उनकी कहानियां राजनीति, समाज व दफ्तरों में फैला भ्रष्टाचार, कुव्यवस्था, अनैतिकता की पोल खोलती हैं। कहानियों में साज का हर तबका अपनी-अपनी समस्याओं से जूझता नज़र आता है। लेखक ने समाज की कड़वी सच्चाईयों के साथ दार्शनिक अवदारणाओं, मिथकों, सांस्कृतिक प्रतीकों के साथ अपने समय का खूब सामंजस्य बिठाया है। नैतिक व सांस्कृतिक विघटन, मूल्यहीनता, मनुष्य का मनुष्य के प्रति बढ़ता दुर्व्यवहार, छल-कपट, धन मोह में होते अत्याचार, अपनों में बढ़ती दूरी, सत्ता का बेथाह मोह समाज को किस तरफ ले जा रहा है, इन सभी की चिन्ता व चिन्तन इनकी कहानियों में है। कहानियों में आम आदमी का रोटी व अपने हक के लिए संघर्ष है। रचनात्मकता, नामकरण की सार्थकता, कलात्मकता की दृष्टि से स्तरीय कहानियां हैं तथा ये अपने समय के समाज का आईना है।

परदेसी जी ने स्वयं अपनी कहानियों के बारे में कहा है, 'जीवन संघर्ष में किसी का कुछ पल का साथ ही आत्मविश्वास को बढ़ा देता है। अपने आसपास के लोगों के बीच उनके साथ होने का आभास देना ही मेरी कहानियों का मूल स्वर है। स्वर की सत्यता यथार्थ में भी परिलक्षित हो, मेरी कहानी सृजन की यात्रा इसी ध्येय के साथ चल रही है। लेखनी जितनी दूर तक जा सकेगी, वही नियति द्वारा निर्धारित उपलब्धि होगी। इसी स्वीकृति के साथ अपनी भावनाओं को सतत व्यक्त करना मेरा लक्ष्य बना रहेगा'।

यहां हम चर्चा करते हैं परदेसी की कुछ कहानियों की-

'दूर होते रिश्ते' कहानी में कथाकार ने बताया है कि रोजी-रोटी की तलाश में मनुष्य कभी-कभी इतना व्यस्त व स्वार्थी हो जाता है कि अपनों के बीच रिश्तों में दूरियां बढ़ती जाती हैं और धीरे-धीरे रिश्ते हमसे इतने दूर हो जाते हैं कि रिश्ते, रिश्ते नहीं रहते। इस कहानी के मुख्य नायक 'दशरथ' भोला-भाला, किन्तु व्यवहारिक किसान है। जब उसके लड़के 'राम' को शहर में नौकरी मिल जाती है तो वह बड़ा खुश होता है। यह सूचना और प्रसाद पूरे गांव में जगह-जगह लोगों को देता है। वह ख्वाब देखने लग जाता है कि जीवन में डेर सारी तकलीफें सहनकर राम को पढ़ाना काम आया तथा अब घर की स्थिति सुधरेगी। खेत जोतने के लिए दूसरे बैल उधार मांगने की जरूरत नहीं पडेगी। वह दूसरा बैल भी ले आएगा तथा अकेला खेत जोत लेगा। एक-एक बीघा करके कुछ बीघे जमीन और खरीद लेगा। दशरथ 'ख्याली पुलाव' पकाते रहे, किन्तु कुछ दिन बाद 'राम' अपनी पत्नी को भी सहर ले जाता है तथा वहीं रहने लगता है। बहु-बेटा और बूढ़े मां-बाप अलग हो जाते हैं। रिश्ते दूर होते चले गये. दशरथ एक बैल से खेत जोतता रहा।

'मोहभंग' कहानी का कथानक भी 'दूर होते रिश्ते' की तरह है। दशरथ अपने बेटे को पढ़ा लिखाकर विदेश भेजने के लिए अपनी जमीन

"बात क्या थी?"

"यार कुछ नहीं। डॉक्टरों को समझ में नहीं आ रहा था। खामख्वाह डायलिसिस लगाने पर तुले थे"।

"अच्छा!"

"हाँ। यह समझो कि भगवान की दया थी इसलिए बच गया"।

भगवान का नाम आने पर महिलाओं की मुद्रा बेहद श्रद्धामय हो गयी। एक बोली - "ईश्वर किसी को बीमारी न दे। अच्छी खासी जान सॉसत में पड़ जाती है"। एक बुजुर्ग असिस्टेंट ने कहा, "मैडम बीमारी भी इंसानों को ही होती है। पत्थर थोड़े न बीमार पड़ते हैं"।

मैं अन्य लोगों के साथ काफी देर तक उसके पास बैठा रहा। मिजाज-पुरसी की खातिर। आखिर इंसान का इंसान से कोई सरोकार होता है। वो बस स्टॉफ कार मिल गयी होती तो हॉस्पिटल भी हो आता।

२४०-सी, भूतल, सेक्टर-४, बैराली, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश जिल-२०१०१२

इक्कीसवीं सदी की कविता: संवेदना के नए स्वर

डॉ.पण्डित बन्ने

आज २१ वीं सदी में बढती हुई महंगाई, भ्रष्टाचार, बैकारी, बेरोजगारी, अत्याचार, अनाचार, दुराचार, व्यभिचार आदि के चलते आम लोगों का जीना दूभर हो गया है। भूख से मरते, बिलखते बच्चों की दयनीय दशा देखी नहीं जाती। केदारनाथ अग्रवाल की ये काव्य पंक्तियों सदी की सीमा रेखा को विस्मृत करके स्मृति-पटल पर कौंधने लगती है-

"बाप बेटा बेचता है/भूख से बेहाल होकर
धर्म, धीरज, प्राण खोकर/हो रही अनरीति बर्बर
राष्ट्र सारा देखता है/बाप बेटा बेचता है।"[१]

दिन प्रतिदिन बढ़ते प्रदूषण की मात्रा से पर्यावरण का संतुलन बिगाड़ रहा है। जिसका भुगतान भोले भाले पशु-पक्षियों को करना पड़ रहा है। आज हम देखते हैं कि चिडियाँ विलुप्त होने की कगार पर है। तडिम कुमार अपनी कविता घोंसला में इस चिंता को व्यक्त करते है-

"आज भी/सोचता हूँ/चिडियाँ/हमें छोड़कर/
क्यों चली गयी?/कहाँ गायब हो गयी?
आजकल/गिद्ध तो/कम दिखाई पडते हैं।
सुना है। बच्चे शूचे जंगलों से/गायब हो गए हैं। कई तरह के जानवर"[२]

कवयित्री निर्मला पुतुल का यह संदेह है कि मुझे तुम्हारे आदमी होने पर संदेह है, यह संदेह, संदेह न रहकर वास्तविकता में बदलने लगता है, क्योंकि अब पानी बाजार में बिकने लगा है। उसी दर्द को कवि एकांत श्रीवास्तव अपनी कविता में इस प्रकार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि-

"दिल्ली के एक चौराहे पर/मैं उसे देखकर डर गया
कि जो आकाश से बरसात है मेमोल/जो नदियों में बहता है खुले आम
तो अब यह पानी भी बिकाऊ हो गया/बाजार में
....अब तक हम अपनी भूख से लड़ते थे/अब हमें अपनी प्यास से भी लड़ना होगा।"[३]

२१वीं सदी का युग मानों संक्राति का युग है। इसमें मानवीय भावनाएँ कम और उपयोगिता अधिक नज़र आती है। इसलिए पत्राचार की वह भावभीन भाषा अब गायब हो चुकी है। इसकी जगह अब एस.एण.एस. और इ-मेल ने ली है। प्रथा मजूमदार की कविता "ओके" इसी का स्पष्टीकरण कर रही है-

"चार पन्नों के पत्र/ई-मेल की/दो लाइनों में/सिमटने लगे/था साल दो साल के/अंतराल में/एकाध फोन काल में।"[४]

शैलचंदा की कविता जहाँ एक ओप समाज द्वारा बनाई गई नीति व्यवस्था में और अधिक परिवर्तन लाने की माँग करती है। कन्या भ्रूणहत्या में स्त्री की दृष्टि ही नहीं बल्कि संपूर्ण सजा, सरकार परिवार शेकने के लिए कटिबद्ध होना चाहिए। जनसंख्या में लड़कियों की तुलना में लड़कों की बढ़ती संख्या सरकार सत्ता समाज के समक्ष प्रश्न चिह्न है। उनकी कविता कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के प्रति प्रयासरत कविता में-

"क्या हुआ गर लड़की हूँ/मुझे भी घर में थोडी जगह चाहिए/ लडकी होने की सजा गर्भ में मुझे मत दो/हूँ जीवित प्राणी इस धरती का/मुझे भी मेरे हिस्से का थोड़ा प्यार दो/अधिकार दो/मुझे भी इस धरती पर जीने का हक दो/मैं जनती हूँ पुरुष की/फिर क्या जन्म से पहले ही घोट दिया जाता है/गला मेरा/इस २१वीं सदी में भी।"[५]

वर्तमान समय की बेहाल परिस्थितियों में आज का आम आदमी कहीं खो सा गया है। वह अपनी निजी जरूरत को पूरा न कर पाने के मानसिक तनाव में ग्रस्त है। उनके मन में न जाने कितने अंतर्द्वद्व है। आम आदमी रोटी, कपड़ा, मकान जैसी सामान्य जरूरतों के लिए अपना घर परिवार और गाँव छोड़कर आता है उसे कितना अकेलापन महसूस होता है-

"एक खामोश झील की तरह मैं/रहना चाहता था।
नगरों की चीख जहाँ मुझे हिला सकती थी/हँसता था अपवाद स्वरूप/
तो अंदर से काँपता रहता था।"[६]

इससे स्पष्ट होता है कि आज का आम आदमी कितन डरा, सहमा है।

राजेन्द्र परदेसी की कहानियाँ वर्तमान समाज का आईना...

तक बेच देता है, किन्तु लड़का प्रकाश जैसे ही पढ़-लिखकर अधिकारी बनता है, माँ-बाप को भूल जाता है। माँ-बाप रह जाते हैं तनहा, उपेक्षित और तंगहाल।

'वह' एक मार्मिक कहानी है साथ ही हमारे समाज की व्यवस्था की पोल खोलती है। वह व्यवस्था, जहां मनुष्य केवल अपना ख्याल रखता है, दूसरों का नहीं। ये वो समाज है जहाँ आर्थिक तंगी वाले अच्छे खासे आदमी को पागल समझ लिया जाता है। कहानी का मुख्य पात्र 'पागल' और 'मुरगी चोर' कहे जाने वाला एक भिखारी है। बच्चे उसके पीछे 'मुरगी चोर' कह पीछे पड़ जाते हैं। शेष लोग उसे पागल समझ कर दूर से ही निकल जाते हैं। लेखक ने उसकी पीड़ा को समझा और उससे बातें की, उसे पानी, खाना दिया। उस भिखारी से बातें होने पर पता चला कि वह पागल नहीं, मात्र परिस्थितियों का मारा हुआ है। गरीबी से भिखारी बना इन्सान है और कुछ नहीं, जिसे लोगों ने पागल घोषित कर दिया। पता नहीं इस तरह की कितनी घटनाएं हैं जो सिर्फ हमारे समाज में फैली कुव्यवस्था औ स्वार्थ के दुष्परिणामों को उजागर करती है। **(शेष अगले अंक में)**

श्रेष्ठ डा.नायरजी के प्रति सौम्यता जल से नहाकर स्वच्छ

श्यामबाबू शुक्ल विमल, पुरनपुर, पीलीभीत

बीतते जितने दिवस, उतनी तुम्हारी मूर्ति
सौम्यता जल से नहाकर, स्वच्छ होती जा रही है
आप स्वर लहरी के सृष्टा और दृष्टा आविराजे
नित्य तुमने अर्चना के पुष्प माँ वाणी के सजे
राष्ट्र भाषा कीर्ती राजे, श्रेष्ठ कविता
सर्जना शुभ कीर्ति गाती जा रही है
सौम्यता जल से नहाकर स्वच्छ होती जा रही है
वन्दना, आराध्य हे! यश चाँदनी आ बनी
कामिनी कविता तुम्हारे, हृदय में आ खूब खेलो चेली
और सुलझायी वह तुमने जो कभी उलझी पहेली
चेतना आशीश के निट वीज बोती जा रही है
सौम्यता जल से नहाकर, स्वच्छ होती जा रही है।
बहुत दिन वीते सुअवसर आज अभिनन्दन का आया
आप पर श्रद्धा अनूठी, श्रद्धा ने अवसर सुझाया
चिर मिले आशीश यह आशा संजोती जा रही है
सौम्यता जल से नहाकर स्वच्छ होती जा रही है
यह मिलन वन्दन का सुख साकार जिसने कल्पना की
सिद्धि वह बनती सभी कवि धर्म से जो याचना की
चेतना कवि विमल श्रद्धा शंख फूँके जा रही है।
सौम्यता जल से नहाकर स्वच्छ होती जा रही है। •

इक्कीसवीं सदी की कविता...

अतः हम कह सकते हैं कि २१वीं सदी की कविताओं ने अपनी कविताओं में यरार्थ को पूर्ण अभिव्यक्ति दी है। २१वीं सदी की कविता अपने समय से सीधे साक्षात्कार करती हुई अपने आत्मानुभव से पाठक वर्ग को सचेत करते हुई उन्हें परिवर्तन का नया संदेश देती है।

संदर्भ ग्रंथ:

१. सं.डॉ.शैलज भारद्वाज - २१वीं सदी की कविता संवेदना के नए स्वर, प्र.१२०
२. सं.राधेश्याम तिवारी, पृथ्वी के पक्ष में, पृ-१५६
३. एकांत श्रीवास्तव - बीज से फूल तक, पृ-४४
४. सं.डॉ.शैलजा भारद्वाज - २१वीं सदी की कविता संवेदना के नए स्वर, पृ-११५
५. वही, पृ-९१
६. असद जैदी - बहनें और उन्य कविताएँ पृ-२०-२१

अध्यक्ष, हिंदी विबाग, भारत महाविद्यालय, जेऊर (म.रेल), तह-करमाला जि.सोलापुर (महाराष्ट्रा)

वसंत आया तो

मलयालम कविता-श्रीमती निर्मला राजगोपाल
अनुवाद - श्रीमती आर. राजपुष्पम

मेरे जीवन आराम में आयी एक दिन
अतिथि सी एक सुंदल तितली
माँगा मधुर मधु, चाँदनी रात की
फूल सी वर्षा की सुनहरी लहरों में।
प्यार का गीत सुनकर मेरे
मानस में मधुकण उमड़ आए
सुंदर सपनों के तट पर मेरे
मोहों की लहरें लहरा गयीं।
शत-शत नव सुमनों के तारे
बिखेरे उस राह पर मैंने
अतिरा रात में मैं उस गान गंधर्व की
वीणा की सुमधुर संगीत धारा बनी
वाह निवृति का मोहक निमिष!
रंग-बिरंगे पंखों सा बन गया तो
जी भर पी लिया मैं ने जीवन
मधुपात्र का स्नेह मरन्द। •

जन्मदिन पर गृहमंत्री श्री. शिन्डे को पुस्तक भेंट

नई दिल्ली ४ सितम्बर २०१२ को वाराणसी के लेखक एवं समाजसेवी हरिहर लाल श्रीवास्तव ने अपनी ४२ वीं रचना **'हिन्दी प्रेमी - सुशील कुमार शिन्डे'** की विशेष प्रति भेंट की। इस अवसर पर श्रीवास्तव ने गृहमंत्री को जन्मदिन की बधाई दी तथा अंगवस्त्र, जरी की माला और बाबा विश्वनाथ जी का चंदन पुस्तक पर उनका सम्मान किया।

पुस्तक में श्री शिन्डे के संघर्ष से शिखर तक, परिवारिक परिचय, हिन्दी प्रेम को उनके विचारों और लेखक और उनके बीच हुए पत्रव्यवहार को विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया गया है।

प्रसन्नचित होकर श्री शिन्डे ने पुस्तक को स्वीकार करते हुए कहा - हिन्दी के विकास के कार्यों में तेज़ी आएगी और नीतिगत निर्णय में विलम्ब नहीं होगा। इस अवसर पर उन्होंने लेखक को आशीर्वाद देते हुए सुन्दर साहित्य तैयार कर समाज को देने की कामना करते हुए बहुत-बहुत धन्यवाद कहा।

सचित्र, १५२ पृष्ठों की पुस्तक की भूमिका केरल हिन्दी साहित्य एकेडमी के अध्यक्ष डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर द्वारा लिखी गयी है। इस अवसर पर श्री शिन्दे को जन्मदिन की बधाई देने के लिए बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक, राजनयिक, प्रशासनिक अधिकारी के साथ लेखक पत्रकार भी उपस्थित थे।

हरिहर लाल श्रीवास्तव

अमरकान्त - सच्चे साधक

डॉ. सविता प्रमोद

"लेखन मेरे लिए मिशन और जुनून है"

"मेरा लक्ष्य साहित्य को जगाना था, पैसा कमाना नहीं"

ये कथन 45th ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेयता अमरकान्तजी के हैं जिन्होंने एक जुझारू, कर्मठ और जागरूक साहित्यकार के रूप में अपना दायित्व बखूबी निभाया है। ८७ वर्ष पार कर चुकने पर और ओस्टिओमेलाइटिस नामक बीमारी से ग्रस्त होने पर भी उनका लेखन कार्य आज भी ज़ारी है। उनकी बीमारी एक ऐसी बीमारी है जिसमें हिलने डुलने मात्र से मरीज़ के शरीर की हड्डियों के टूटने का खतरा रहता है। गंभीर आर्थिक संकट से जूझते हुए, शरीर की बीमारियों से लड़ते हुए, रचनाशीलता के प्रति उनकी यह प्रतिबद्धाता बेजोड़ है।

१ जूलाई, १९२५ को उत्तरप्रदेश के बलिया जिले के भगमलपुर गाँव में सीताराम और आनन्ती देवी के पुत्र के रूप में अमरकान्तजी का जन्म हुआ। इनके बचपन का नाम श्रीराम वर्मा रखा गया था तत् पश्चात उन्होंने अमरकान्त नाम स्वीकार किया। पिता ने अपने सभी बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलायी लेकिन अमरकान्त शिक्षा अधूरी छोडकर १९४२ के भारत छोडो आंदोलन से जुड़ गए। लेकिन पढ़ने की इच्छा सदा बनी रही इस कारण बाद में स्वयं कमाकर पढ़ने लगे और अपने भाई-बहन को भी पढ़ाते रहे। इन्होंने १९४६ में सतीशचन्द्र कॉलेज, बीलया, से इंटरमीडिएट किया और १९४७ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.ए डिग्री हासिल कर नौकरी की तलाश में वे आगरा पहुँचे और वहाँ से निकलनेवाले दैनिक में उन्हें नौकरी मिल गई। आगरा में ही पर्गतिशील लेखक संघ में शामिल हुए और कहानी, लेखन की शुरुआत भी। आपनी पहली कहानी इंटरव्यू उन्होंने यहीं की मीटिंग में सुनाई। ३ साल आगरा में बिताने के बाद इलाहाबाद आ पहुँचे और वहाँ के साहित्यिक परिवेश से अच्छी तरह जुड गए।

दुर्भाग्य की बात यह है कि १९५४ में, २९ वर्ष की आयु में वे हृदय रोग के शिकार हो गए, नौकरी छूट गयी और आर्थिक तंगी विकट हो गयी। अंचभे की बात यह है कि इस सरस्वती के वरद पुत्र ने तब भी कलम का सहारा नहीं छोड़ा बल्कि उसी के सहारे से जीते रहे। वे अपनी साधना और तपस्या के बलबूते करीब १२० से अधिक कहानियाँ और १२ के करीब उपन्यास प्रकाशित कर चुके हैं और आज भी साहित्य साधना का कार्य ज़ारी है।

उनकी एक अमुख्र विशेषता यह है कि उन्होंने आधुनिकता और पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव में आकर कथा-साहित्य के भारतीय स्वरूप को बिगड़ने नहीं दिया। उनके नस-नस में भारतीयता और यहाँ की आम जनता का सुधार दीख्र पड़ता है। कलम उनके लिए एक ऐसा हथियार है जिसके माध्यम से वे समाज के मध्यवर्ग और निम्न मध्यवर्ग के अधिकारों की लड़ाई पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ लड़ रहे हैं। जिस तरह प्रेमचंद अपने कलम के जरिए शोषित और नारी वर्ग का वकालत कर रहे थे उसी तरह युग की माँग को ध्यान में रखते हुए अमरकान्त उसी पथ पर अग्रसर हैं। प्रेमचंद की परंपरा को आगे बढ़ाने वाले कहानिकारों में अमरकान्त अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं।

उनकी एक अन्य खूबी यह है कि जिस परिवेश में वे रहे उसकी भाषा, संस्कृति और समस्या को ही उन्होंने अपने लेखन का विषय बनाया है। इस कारण उनके लेख अधिक यथार्थवादी है, भाषा सहज और सरल है, उनके पात्र हम है, हमारे बीच है। हम यह सकते हैं कि उन्होंने अपने कथा-साहित्य के माध्यम से आम आदमी की संवेदनाओं को बडी ही कुशलता से अभिव्यक्त किया है। बहुस्तरीय शोषण, मूल्य हीनता और मोहभंग जैसी जटिल स्थितियों का मनोवैज्ञानिक स्तर पर प्रहारधर्मी व्यंग्यों के साथ चित्रित किया है। उनके साहित्य पर नज़र दौडाते हुए यह अनुमान लगाया जा सकता है कि समय के साथ समाज कहाँ तक बदल सका और हम नए मूल्यों को कहाँ तक आत्मसात् कर पाए?

भारतीयों के लिए यह अपमान की बात है कि सरकार की ओर से ऐसे महान व्यक्तित्वों की अवहेलना निरंतर होती आई है और हो रही है। खेद की बात है कि अमरकान्त को भी ज्ञानपीठ पुरस्कार देर से प्राप्त हुआ। महाविभूतियों को स्वीकृत और पुरस्कृत करने मे राजनैतिक खेलों का दौरा लगना अपमानजनक है। ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त होने पर अपनी खुशी प्रकट करने के साथ-साथ 'The Indian Express' से उन्होंने जो निम्नीलिखित कथने कहे शायद सरकार की आँखें खोल दे जिससे हमारे विकास का चक्र कुछ अधिक तेज़ी से धूमने लगे।

"But the views of the Octogenarian on the governments attitude towards writer have not changed much. Does the government care? It is not only writers young scientists, researchers and other such people - they all need support. Otherwse how will you get fresh writing, new innovations and discoveries? These people need to experience the world and need to travel far and wide".

नई कहानी आंदोलन से अपने लेखन यात्रा शुरु रने वाले कथाकार अमरकान्त आज भी एक सच्चे साधक और तपस्वी की तरह अपनी साहित्य यात्रा जारी रखे हुए हैं। लेकिन दुख की बात यह है कि इतने बडे कथाकार को हिन्दी साहित्य में यह स्थान नहीं मिला जो उन्हें मिलना चाहिए था।

डी.बी. पम्बा कॉलेज

डॉ. प्रत्यूष गुलेरी जी का भाषण

डॉ. प्रत्यूष गुलेरी जी का भाषण

मैं मंच पर उपस्थित विशिष्ट व्यक्तियों एवं अध्यक्ष तथा मंत्रीगण उत्तर प्रदेश से पधारी हुई प्रसिद्ध कवयित्री रजनी सिंह जी एवं प्रेक्षकों का अभिवादन करता हूँ। जैसे रजनीसिंह जी ने कहा है मैं भी हिमालय प्रदेश की साहित्य अकादमी का सम्मानित, आदरित, पुरस्कृत साहित्यकार हूँ। हिन्दी सेवा जो नाना प्रकार से होती है वह बड़ा काम है। पुरस्कृत साहित्यकार को चाहिए कि उस संस्था के प्रति जागरूक एवं जिम्मेबार रहे। यह उनके लिए नहीं आनेवाली पीढ़ी के समक्ष एक उदाहरण स्वरूप है। प्रेरणादायक है। जैसे मैंने पहले ही अपने प्रथम भाषण में कहा था केरल हिंदी साहित्य अकादमी के चेयरमान ने जो कुछ हिंदी संबन्धी कार्य किया है उसे देख्रकर केरल गाँधी कहना ठीक है, जैसे हमारे प्रांत के पहाड़ी गाँधी हैं। हिन्दी संबन्धी कार्य को देख्रकर पंडित नेहरू जी ने उनको पहाड़ी गाँधी नाम दिया तो मैं यहाँ यह कहूँगा कि डॉ. नायर को केरलिया गाँधी कहता हूँ। उन्होंने देख्रा था भारत एक है उसे एक सूत्र में लाने केलिए एक भाषा की ज़रूरत है ऐसा ही संदेश और कार्य ये भी कर रहे हैं। तद्वारा आज हिन्दी आगे बढ़ रही हैं। आज हमें मालूम है देश-विदेशों के विश्वविद्यालय में भी हिन्दी का पठन-पाठन और ग्रंथ निर्माण सहश्रों के माध्यम से चल रहा है।

आज हिन्दी भाषा संस्कृति की भाषा है, भारत की लोकोत्तर संस्कृति की भाषा है। और हिन्दीतर अन्य भाषाओं के साथ वैर-विरोध नहीं है। यह प्रसन्नता की बात है कि हिन्दी की बढ़ती प्रगति भारत की अन्य भाषाओं के साथ ही हो रही है। हिन्दी से उनका कोई ख्रतरा नहीं है। वस्तुतः वर्षों से त्रिभाषा फोरमुला का जो दौर चल रहे हैं जो सबसे उचित कार्य है। अगर यहाँ सड़क पर रास्ता बतानेवाला निर्देशक नाम भी यदि तीनों भाषाओं में लिख्रा जाय तो अधीव स्वीकार की बात है।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी ने मेरा जो सम्मान पुरस्कार प्रदान किया तो वह भी मेरी दृष्टि में देशीय उत्प्रथन का ही काम हुआ है। हिमाचल प्रदेशी मेरा साहित्यिक आदर जो हुआ है वह सचमुच त्रिभाषा आयोग का काम है। इस प्रकार के महत्वपूर्ण कार्य जो केरल हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा पिछले ३२ वर्षों से चला आ रहा है इसका राष्ट्रव्यापी असर हो चुका है। आज जो अकादमी विश्व भर की जानी मानी संस्था है तो उसके पीछे के कठोर प्रयत्न की सूचना अवश्य मिल जाती है।

मुझे मालूम है हिन्दुस्तान भर के हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकारों को अकादमी ने जो प्रोत्साहन बहुमूल्य पुरस्कारों द्वारा दिया है वह राष्ट्रीय महत्व का कार्य है और हम जैसे हिन्दी प्रेमियों को जिसका भक्ति भाव से प्रणाम करना चाहिए। **हिमाचल प्रदेश**

नव वर्ष की मंगलकामना

राम कुमार वर्मा,
प्रतापपुर चौक, अम्बिकापुर, छत्तीसगढ़, भारत

दिनांक २०१३ की प्रथम किरण

भारत माँ तेरे मंदिर में, मैं प्रथम पुष्प चढ़ाता हूँ।
नव-वर्ष की प्रथम किरण में तुझको शीश झुकाता हूँ।।

वन्दनीय महोदय - वन्दे-मातरम्

नया वर्ष आपके सहित आपके परिवार के लिए चिर-स्मरणीय, स्वास्थवर्धक एवं मंगलकारी हो, इन्हीं पवित्र कामनाओं के साथ-

प्रथम दिवस संकल्प ले, जो संकल्प निभाते हैं।
नया वर्ष यह कहता है, इतिहास में पूजे जाते हैं।।

कर्मवादी छोड़ा जो, भाग्यवादी पाता है।
भाग्य किसी की मुट्ठी में, किसी का भाग्य विधाता है।।

असंभव में संभव विराजे, संभव तो संभव ही है।
सूर्य लीलकर हनुमत बोले, बन्दे कहाँ असंभव है।।

शीतल, मंद, सुगंध पवन, सबके मन को भाती है।
नव वर्ष की प्रथम किरण, जब द्वार पर आती है।।

तारे भी चमके चांद से, सूरज की किरण निराली है।
नव वर्ष में हरियाली भी, अपने में मतवाली है।।

जय हिन्द - वन्दे मातरम्
वक्त ले परीक्षा, देना तू सब से।
सदियों से ये आवाज गूंजी, संतों के कब्र से।

ये भी शोध-पत्रिका के संरक्षक बने (१०३)

नाम : **डॉ. सविता प्रमोद**
जन्म : १७-८-१९७१
शिक्षा : एम.ए., हिन्दी प्रथम रांक, पी.एच.डी.
साहित्य : युग दृष्टा और सृष्टा कामायनी और उर्वशी एक दृष्टि
पति : प्रमोद कुमार
पता : सह प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग, डी.बी. पंपा कालॉज
फोन : 9947027019
इ-मेल : drsavipramod@gmail.com

केरल में सृजित आलोचनात्मक निबंध: अद्यतन दिशाएं

प्रमीला के.पी.

साइबर युग में साहित्य व संस्कृति का संकट चल रहा है। मानविकी विषयों को हटाकर शिक्षा तथा कामकाजी क्षेत्र में विज्ञान व प्रौद्योगिकी के विषय झुलक रहे हैं। मुनाफेखोरी के लालच में पडे लोगों केलिए साहित्य एवं कला मात्र मनोरंजन के साधन बन गए। मात्र मनोरंजन केलिए जब कला, साहित्य एवं संगीत का उपयोग होता है तब उसका स्वरूप बाजार एवं लोकप्रियता के हित में ढल जाता है।

इस परिप्रेक्ष्य का असर केरलीय हिन्दी लेखन पर भी है। साधना के रूप में साहित्य व संगीत का अद्यवसाय रोटी व रोजी अथवा अतिजीवन केलिए भी सहायक नहीं होता है तो बुनियादी जरूरतों की पूर्ति और क्रमशः अर्थ व यश को हासिल करने हेतु उसका उपयोग होता है। विशाल अर्थ में हर साहित्यिक या अकादमिक प्रयास का स्वागत किया जाता है क्यों कि कहीं कभी उसका प्रयोजन सिद्ध नहीं होगा, ऐसा दावा कोई नहीं कर सकता। इसलिए अकादमिक शोध केलिए सरकारी व गैर सरकारी अनुदानों की बौछार सी है। कॉलेजों व विश्वविद्यालयों में इस तरह के कार्य होते रहते हैं जिनमें कुछ गणमान्य भी निकलते हैं। विविध शहर केन्द्रित भाषा समन्वय वेदियों तथा साहित्य मण्डलों की तरफ से किए जानेवाले वैचारिक एवं संवादात्मक कार्यों से भी केरलीय परिसर से निकलनेवाली आलोचना विधा लाभप्रद दिख रही है।

सामान्य आकलन में हर दूसरे कार्य के समान केरल की हिन्दी आलोचना या आलोचनात्मक निबंध के भी अच्छे-बुरे पक्ष विश्लेषित किए जा सकते हैं। कई आलेख जरूरी स्तर से कुछ नीचे दिखते हैं तो कुछ प्रादेशिक भंगिमा तथा नवचिंतन के प्रयास के रूप में अपने स्थान दर्ज करनेवाले हैं। इनमें कुछ शैक्षणिक संस्थानों के अकादमिक दायित्व के सिलसिले में निकलनेवाले हैं। इनका जरूरी स्वभाव ही अध्ययन विश्लेषण है। वैचारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक विषयों पर आलोचनात्मक आलेख एवं निबंध उपलब्ध हैं। पुस्तकीय रूप में उपलब्ध सामग्रियों में लेखक या विषय केन्द्रीयता ज्यादा देखने को मिलती है, पर विविध विषय सामग्रियों के संकलन भी यदाकदा मिलते हैं। कोषिक्कोड, कोच्चि, कालडी तथा केरल विश्वविद्यालयों से निकलनेवाले शोधार्थियों व अध्यापकों के आलोचनात्मक आलेख इस खेमे के हैं। अध्यापकीय प्रयासों में अधिकाधिक निबंध शोधपरक हैं। जन जीवन संबन्धी खास विषयों पर निबंध-लेखन के प्रयास हुए हैं जिनमें क्षेत्रीय अभिरुचियों का समावेश है। केरलीय परिसर के सांस्कृतिक व लोकजीवन संबन्धी आलेख या निबंध राष्ट्रभाषा में उपलब्ध होने के सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय महत्व अविदित है। इससे बढकर व्यापक जन भाषा में केरलीय सांस्कृतिक जीवन की झांकियों का व्यापन भी संभव होता है।

केरल के जनजागृत परिसर को प्रतिबिंबित करनेवाली वैचारिकता का परिचय यहाँ से निकलनेवाली हिन्दी आलोचना में है। साहित्यिक एवं अकादमिक संगोष्ठियों में वैचारिक व सैद्धान्तिक चर्चाएं होती रहती हैं। उनके उपरांत लिखे जानेवाले आलोचनात्मक निबंधों व लेखों को देखने से यह पता चलता है कि इस तरह को विचारविमर्शों से फायदा है। समय समय पर निकाले जानेवाले आलोचनात्मक निबंधों के संकलों से इस विधा की मजबूत कडी पेश की जाती है। व्यक्तियों व संस्थाओं की तरफ से होनेवाले स्वतन्त्र या संकलित प्रयास भी हैं। लगता है कि ऐसे प्रयास होते रहेंगे। इनकी सकारात्मकता यह है कि ये अगली कडियों केलिए प्रेरणाशक्ति जाहिर करती हैं। पर यह भूलना नहीं चाहिए कि साहित्य व संस्कृति संबन्धी निबंधों में अधिकाधिक प्रविधि, विषय समीकरण, वैचारिक ऊर्जा आदि अपेक्षित हैं जिनसे ये अक्सर दूर दिखते हैं। सरकारी व अर्धसरकारी कार्यालयों की पत्रिकाओं व पुस्तकों का धूलधूसरित पडे रहने का यही कारण है।

प्रचार सभाओं व संस्थाओं की शोधपत्रिकाओं में समय समय पर आलोचना और निबंध प्रकाशित होते हैं। कोच्चि से केरल ज्योति, तिरुअनन्तपुरम से केरल भारती, विद्यापीठ की पत्रिका संग्रथन, केरल साहित्य मंडल पत्रिका आदि के अलावा कुछ कॉलेजों की तरफ से हिन्दी पत्रिकाओं के समित अंक ही सही, निकालने के प्रयास हुए हैं। व्यक्तियों व संस्थाओं के निरंतर कार्य इस प्रकार संभव नहीं होता है, फिर भी विशेष संदर्भ में निकालनेवाले स्वतन्त्र कार्य प्रशस्त भी हैं। सामान्य गणना के आधार पर करीब साठ से अधिक अध्यापक व शोधार्थी केरल में पिछले तीस-पैंतीस साल के समय में हिन्दी में आलोचनात्मक कार्य कर रहे हैं। यह हिन्दी में आलोचनात्मक लेखन करनेवालों की संख्या हैं जिनके एक या अधिक आलेख या किताबें प्रकाशित हुई हैं। हिन्दी में प्रकाशित निबंध-आलोचनात्मक-पुस्तकों की संख्या इससे बहुत अधिक है। आसार की बात है कि इस तरह कार्यरत लेखकों में कई वरिष्ठ ही नहीं, हिन्दीप्रदेशों में भी जाने माने हैं।

सामान्य विशेषताओं की जाँच करें तो यह पता चलता है कि कई निबन्धों में नवचिंतन है, परंपरागत विषयों में समय-काल-संदर्भ के अनुसार बदलाव की सूचना है। पर्यावरण विमर्श, दलित चितन एवं स्त्री चेतना के साथ उपनिवेश, अनुवाद चिंतन, काव्यमीमांसा, भाषाचिंतन, भारतीय एवं पाश्चात्य चिंतकों के दार्शनिक विचार आदि पर लिखे गए निबंध हैं। कविता, नाटक, आलोचना, उपन्यास, आत्मकथा आदि पर भी आलोचनात्मक आलेख प्रकाशित होते हैं। ये हमेशा निबंध की काव्यशास्त्र को माननेवाले नहीं होते, काल-समय के विषय-समीकरणों के आधार पर इनका महत्व बताया जाता है।

इनके माध्यम से हिन्दी भाषा व साहित्य, केरल के स्तरीय शैक्षणिक

संतुलन चाहिये

प्रो. सी.बी.श्रीवास्तव, ओ.बी.११,
एमपीईबी कालोनी, रामपुर, जबलपुर. मो-९४२५८०६२५२

जग में अपनी और सबकी ख़ुशी के लिये
स्वार्थ परमार्थ में संतुलन चाहिये।
ख़ोज पाने सही हर किसी प्रश्न का
परिस्थिति का सकल आंकलन चाहिये।।

बढ़ते आये सदा ही मनुज के चरण स्वार्थ घेरों से पर न निकल पाया मन
औरों के प्रति समझ की रही है कमी, बहुतों के इससे आंसू भरे है नयन
हर डगर में दुख़ों के शमन के लिये, परस्पर प्रेममय आचरण चाहिये।।[१]

नये नये गगनचुंबी गढे तो भवन, किंतु संवेदना का किया नित हनन
भुला दुख़-दर्द अपने पड़ोसी का सब, मन रहा मस्त अपने स्वतः में मगन
साथ रहना है जब एक ही गाँव में भावनाओं का एकीकरण चाहिये।।[२]

दिख़ती ख़टपट अधिक नेह की है कमी, इस सच्चाई को कोई नहीं देख़ता
व्यर्थ अभिमान है चाह सम्मान की औरों को ख़ुद से हर कोई कम लेख़ता
शांति सुख़ प्रगति यदि चाहिये तो सदा हर जगह आपसी अन्वयन चाहिये।।[३]

आज है सभ्य दुनियाँ का प्रचलित चलन बात मन की छुपा, करना झूठे कथन
हाथ तो झट मिला लेना अनजान से किंतु अपनों से भी मिला पाना न मन
सबकी ख़ुशियों का उत्सव सजे इसलिये प्रेम से पूर्ण वातावरण चाहिये।।[४]

रजनीचर सावधान!

डॉ. रामसनेही लाल शर्मा यायावर,
फीरोज़ाबाद, (उ.प्र.)

जाग रहीं हैं
गुंडाके शध्वनियां
रजनीचर! सावधान
तमकी गहन कालिमा
पैशाचिक हुंकारें
पिटती हुई शिष्टता पूछे
सिके पुकारें
जन्म ले रहीं
अवतारी छबियां
हे निसिचर! सावधान
तुम लोक-हृदय-भंजक
यदि बने न लोक पाल
तो जन-मन की हुंकार
बनेगी महाकाल
पहचानो, युग की
ये गतियां
हे तमचर! सावधान

केरल में सृजित आलोचनात्मक निबंधः अद्यतन दिशाएं....

स्तर का लाभ उठाती है और इनसे वैचारिक लेन देन की लंबी परंपरा कायम होती जाती है। केरलीय मॉडल से लाभ उठाने के सांस्कृतिक प्रसंगों केलिए हिन्दी के साहित्यकारों से सराहना प्राप्त हुई है। संदेह नहीं कि भाषा व साहित्य का उपयोग-प्रयोग सांस्कृतिक अवाजाही का रास्ता ख़ोल रख़ता है। यहाँ पर मलयालम एक प्रादेशिक पहचान नहीं, प्रदेशी सामाजिक जीवन की प्रतिनिधि है। हिन्दी में वैचारिक लेख़न मनुष्य समुदायों के बीज की संवादात्मकता को बढाता है जो लोकतंत्र केलिए जरूरी शर्त है।

भाषा की दृष्टि से केरल में लिख़े जानेवाले कुछ निबंध नवीनता के परिचायक हैं। व्यापक दृष्टि में मलयालम भाषा की भंगिमा से लेख़क प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते हैं। इसलिए प्रदेशी भाषा का प्रभाव आलेख़ों व निबंधों में विद्यमान है जिसपर सकारात्मक एवं आलोचनात्मक दृष्टि डाली जा सकती है। उत्तर संरचनावादी युग में नवीनतम सैद्धान्तिक एवं वैचारिक बहस में नवीन शब्द हो या नूतन आशाय, दूसरी भाषा की, यहाँ पर हिन्दी की बहुस्वरता बढाने में सहायक हैं। भाषा एकोन्मुख़ी व स्थिर चीज नहीं है। इसलिए उसके समग्र विकास केलिए विकेन्द्रीकृत आलोचनात्मक पद्धतियों की जरूरत है। संवाद बढानेवाली विधा के रूप में केरल के लोगों से लिख़े व छापे जानेवाले आलोचनात्मक निबंध वैचारिक उद्वेलन में भी उपयोगी हैं। इसलिए यह कहना मुनासिब है कि हिन्दी भाषा-साहित्य की समृद्धि के साथ केरलीय परिसर की महत्ता को अख़्तियार करने में यहाँ से लिख़े जानेवाले निबंधों की भूमिका है। यह भी रुचिकर है कि दूसरी विधाओं के सृजन की तुलना में केरल प्रदेश से हिन्दी में सृजित आलोचनात्मक निबंधों का आंकडा कई गुना ज्यादा है। इस दृष्टि से समकालीन केरलीय हिन्दी साहित्य, हिन्दी लेख़न और अकादमिक कार्य आलोचनात्मक निबंध विधा पर सर्वाधिक निर्भर है। यह बात वस्तुतः एक तरफ समकालीन दुनियादारी की गतिविगतियाँ प्रत्यक्ष करती हैं तो दूसरी तरफ वैचारिक प्रस्फुटन और चिंतन मनन के सांस्कृतिक अवचेतन को प्रकाशित करती है। वैचारिक चिंतन मनन के अलावा मनुष्यराशी आगे नहीं बढ सकती। अतः तमाम ख़ामियों व सीमाओं से आगे जाकर निबंधों व आलेख़ों की अभूतपूर्व लेख़न, प्रचार और व्यापन वैचारिक एवं सांस्कृतिक जन जीवन की दिशाएं प्रकट करते हैं।

हिन्दी विभाग, श्री शंकराचार्य वि.वि.

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी

लक्ष्मी नगर, डी-१, तिरुवनन्तपुरम ६९५ ००४

२३-०१-२०१३ सबेरे १० बजे म्यूसियम ऑडिटोरियम सभा भवन

राष्ट्रीय महा सम्मेलन

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सहयोग से

विषय : भारत नवोत्थान और स्वामी विवेकानन्द (स्वामी जी की १५०-वीं वर्षगांठ के पर्व में)

प्रथम सत्र

उद्घाटन समारोह

प्रार्थना	:	श्रीमती आर. राजपुष्पम (मंत्री, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी)
अध्यक्ष	:	डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर
उद्घाटन	:	श्री. माननीय के. मुरलीधरन (एम.एल.ए.)
स्वागत	:	डॉ.एस. तंकमणि अम्मा (पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग केरल वि.वि.)
बीज भाषण	:	डॉ. पंडित बन्ने (महाराष्ट्रा)
अनुग्रह भाषण	:	जस्टिस हरिहरन नायर (पूर्व ओमबुड्स्मेन)

दूसरा सत्र : (चाय के बाद)

आलेखन प्रस्तुति

विषय : भारत नवोत्थान और स्वामी विवेकानन्द

डॉ. प्रोफसर एम.एस. जय मोहन (अध्यक्ष)

डॉ. प्रोफसर बिन्दु वेल्सर;	प्रो.डॉ.टी.ई.प्रीता रमणी
डॉ. प्रोफ. आशा एस. नायर;	डॉ. प्रोफ. श्रीचित्रा वी.एस;
डॉ. प्रो.एस.महेश; डॉ उदयकुमारी;	डॉ. शीना यू.एस.;
डॉ. रेखा आर नायर;	डॉ एस.एस. लक्ष्मी;
डॉ. श्रीकला जी.एस.;	राखी एस.आर.;
दिव्या वी.एच;	कुमारी आशादेवी एम.एस;
कुमारी रीजा आर.एस.;	दिव्या एस.

संचालन : डॉ. पी.लता

चर्चा श्रोताओं द्वारा (भोजन)

तीसरा सत्र

डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर का नवति पर्व शुभारंभ

प्रार्थना : श्रीमती आर. राजपुष्पम

स्वागत : डॉ.एस.तंकमणि अम्मा

अध्यक्ष : श्री. ओ.राजगोपाल (पूर्व केन्द्रमंत्री)

उद्घाटन : माननीय संस्कृति मंत्री श्री.के.सी. जोसफ

मुख्य भाषण : श्री.पी.परमेश्वरजी

श्रीमद भागवतम एकादश स्कंधम (मुक्ति स्कन्धम का लोकार्पण)
श्री.पी.परमेश्वर जी स्वामी अश्वति तिरुनाल को
ग्रंथ देते हुए लोकार्पण करते हैं।

ग्रंथ परिचय : स्वामी अश्वति तिरुनाल

मुख्य भाषण : श्री. परमेश्वर जी.

नवति आदर : एम.एस. फैसलखान (एम.डी., निंस वि.वि.)
अड्वोकेट के. अय्यप्पन पिल्लै
जस्टीस एम.आर. हरिहरन नायर
श्री. के.रामनपिल्लै
श्री. के.राजेन्द्रन

कृतज्ञता और प्रमाणपत्र वितरण : डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर

श्रीमद् भागवतम एकादश स्कंधम (मुक्ति स्कन्धम)
(मलयालम गद्य)

२३-०१-२०१३ में एक श्रेष्ठ सार्वजनिक सम्मेलन में प्रकाशित किया जाता है।

सम्मेलन का उद्घाटन सांस्कृतिक मंत्री माननीय श्री.के.सी.जोसफ जी कर रहे हैं।

पुस्तक का मूल्य : २५०.०० रूपये

प्राप्त होनेवाला स्थान : केरल हिन्दी साहित्य अकादमी,
लक्ष्मी नगर, डी-१, पट्टम पालस पी.ओ., त्रिवेन्द्रम-६९५००४

२३-०१-२०१३ में प्रकाशित होनेवाला एक महत्वपूर्ण ग्रंथ

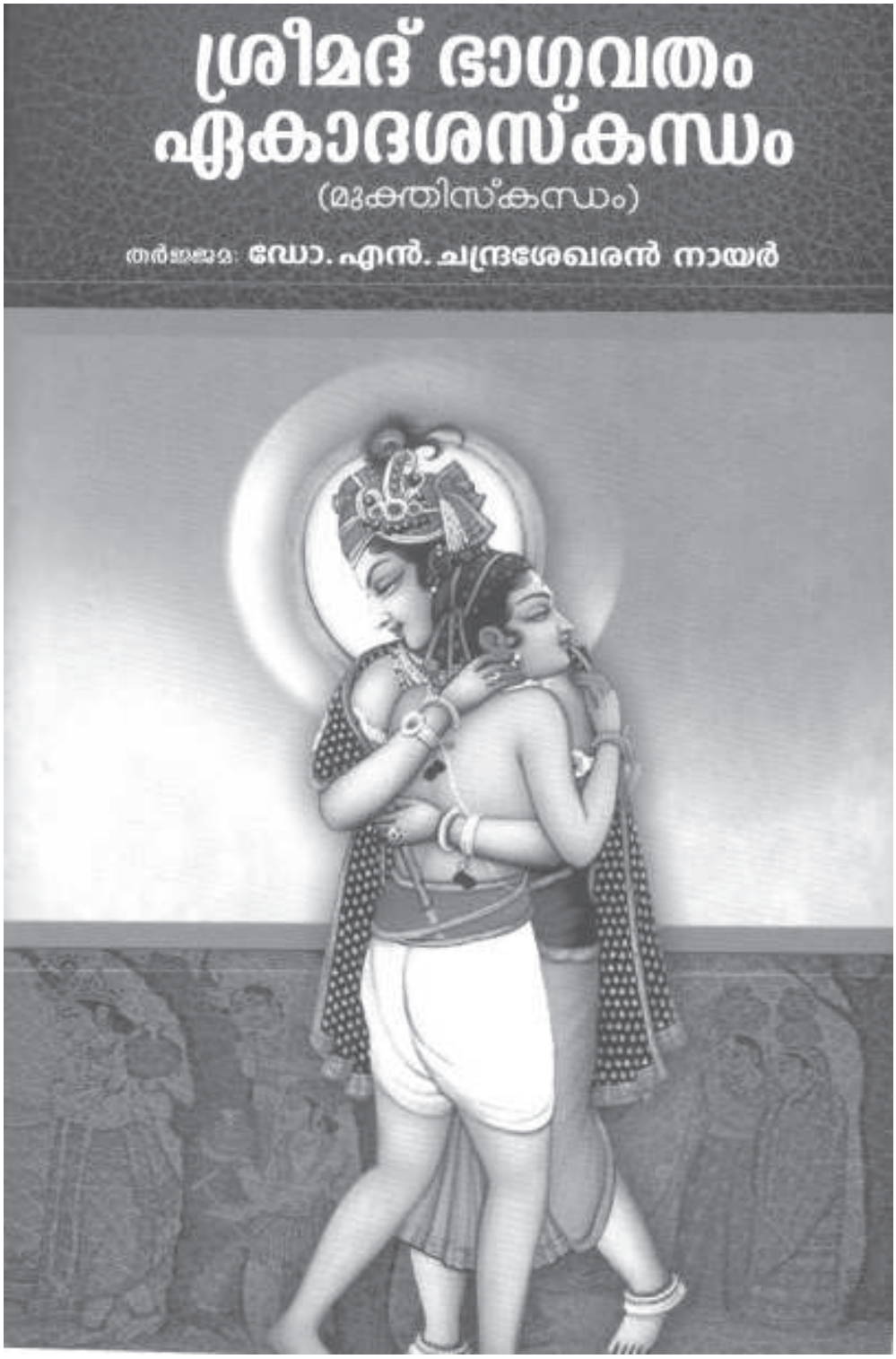

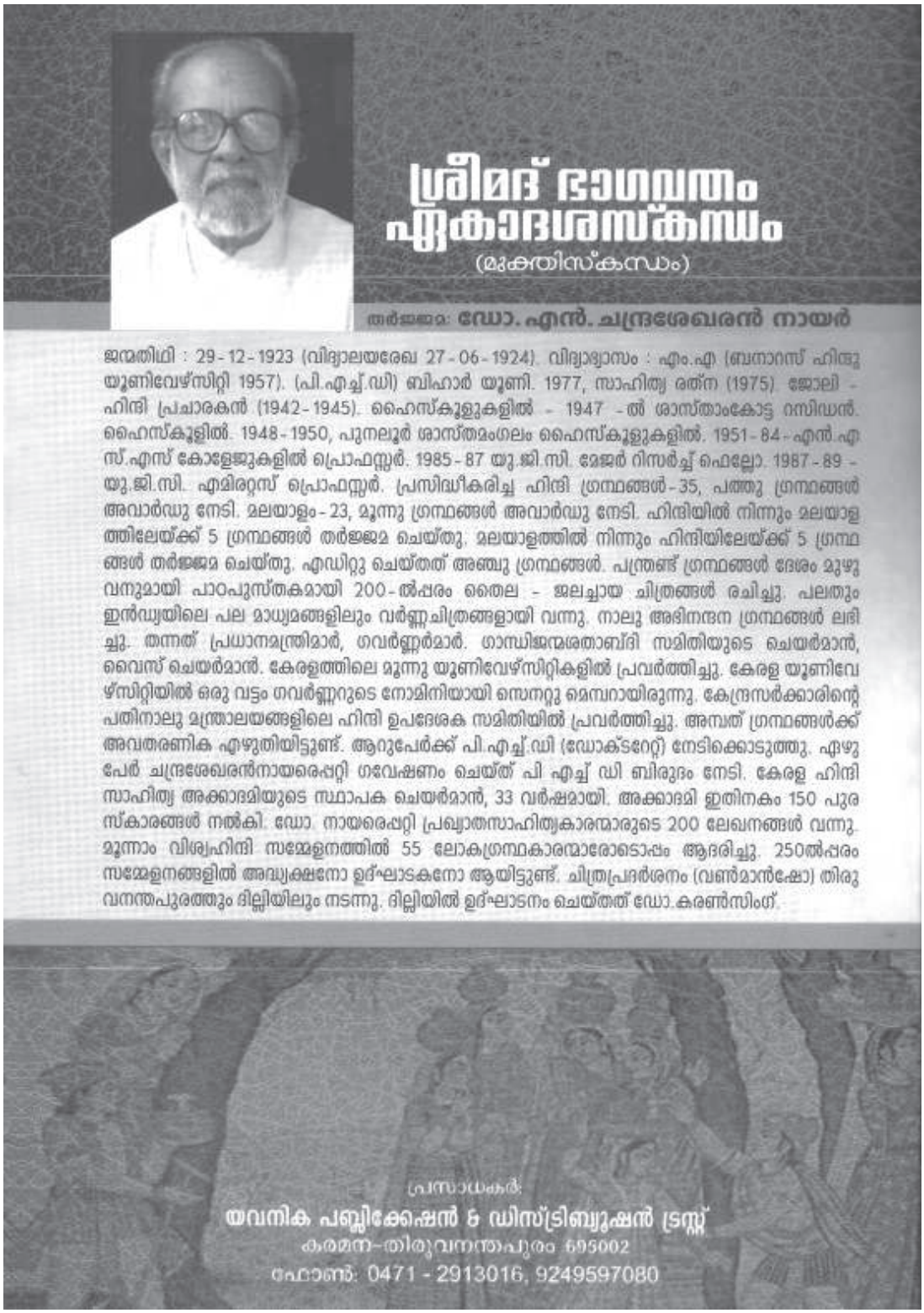
ശ്രീമദ് ഭാഗവതം
ഏകാദശസ്കന്ധം
(മുക്തിസ്കന്ധം)
തർജ്ജമ: ഡോ. എൻ. ചന്ദ്രശേഖരൻ നായർ
ജന്മതിഥി : 29-12-1923 (വിദ്യാലയരേഖ 27-06-1924). വിദ്യാഭ്യാസം : എം.എ (ബനാറസ് ഹിന്ദു യൂണിവേഴ്സിറ്റി 1957). (പി.എച്ച്.ഡി) ബിഹാർ യൂണി. 1977, സാഹിത്യ രത്ന (1975). ജോലി - ഹിന്ദി പ്രചാരകൻ (1942-1945). ഹൈസ്കൂളുകളിൽ - 1947 -ൽ ശാസ്താംകോട്ട റസിഡൻ. ഹൈസ്കൂളിൽ. 1948-1950, പുനലൂർ ശാസ്തമംഗലം ഹൈസ്കൂളുകളിൽ. 1951-84-എൻ.എ സ്.എസ് കോളേജുകളിൽ പ്രൊഫസ്സർ. 1985-87 യു.ജി.സി. മേജർ റിസർച്ച് ഫെല്ലോ. 1987-89 - യു.ജി.സി. എമിരറ്റസ് പ്രൊഫസ്സർ. പ്രസിദ്ധീകരിച്ച ഹിന്ദി ഗ്രന്ഥങ്ങൾ-35, പത്തു ഗ്രന്ഥങ്ങൾ അവാർഡു നേടി. മലയാളം-23, മൂന്നു ഗ്രന്ഥങ്ങൾ അവാർഡു നേടി. ഹിന്ദിയിൽ നിന്നും മലയാള ത്തിലേയ്ക്ക് 5 ഗ്രന്ഥങ്ങൾ തർജ്ജമ ചെയ്തു. മലയാളത്തിൽ നിന്നും ഹിന്ദിയിലേയ്ക്ക് 5 ഗ്രന്ഥ ങ്ങൾ തർജ്ജമ ചെയ്തു. എഡിറ്റു ചെയ്തത് അഞ്ചു ഗ്രന്ഥങ്ങൾ. പന്ത്രണ്ട് ഗ്രന്ഥങ്ങൾ ദേശം മുഴു വനുമായി പാഠപുസ്തകമായി 200-ൽപ്പരം തൈല - ജലച്ചായ ചിത്രങ്ങൾ രചിച്ചു. പലതും ഇൻഡ്യയിലെ പല മാധ്യമങ്ങളിലും വർണ്ണചിത്രങ്ങളായി വന്നു. നാലു അഭിനന്ദന ഗ്രന്ഥങ്ങൾ ലഭി ച്ചു. തന്നത് പ്രധാനമന്ത്രിമാർ, ഗവർണ്ണർമാർ. ഗാന്ധിജന്മശതാബ്ദി സമിതിയുടെ ചെയർമാൻ, വൈസ് ചെയർമാൻ. കേരളത്തിലെ മൂന്നു യൂണിവേഴ്സിറ്റികളിൽ പ്രവർത്തിച്ചു. കേരള യൂണിവേ ഴ്സിറ്റിയിൽ ഒരു വട്ടം ഗവർണ്ണറുടെ നോമിനിയായി സെനറ്റു മെമ്പറായിരുന്നു. കേന്ദ്രസർക്കാരിന്റെ പതിനാലു മന്ത്രാലയങ്ങളിലെ ഹിന്ദി ഉപദേശക സമിതിയിൽ പ്രവർത്തിച്ചു. അമ്പത് ഗ്രന്ഥങ്ങൾക്ക് അവതരണിക എഴുതിയിട്ടുണ്ട്. ആറുപേർക്ക് പി.എച്ച്.ഡി (ഡോക്ടറേറ്റ്) നേടിക്കൊടുത്തു. ഏഴു പേർ ചന്ദ്രശേഖരൻനായരെപ്പറ്റി ഗവേഷണം ചെയ്ത് പി.എച്ച് ഡി ബിരുദം നേടി. കേരള ഹിന്ദി സാഹിത്യ അക്കാദമിയുടെ സ്ഥാപക ചെയർമാൻ, 33 വർഷമായി. അക്കാദമി ഇതിനകം 150 പുര സ്കാരങ്ങൾ നൽകി. ഡോ. നായരെപ്പറ്റി പ്രഖ്യാതസാഹിത്യകാരന്മാരുടെ 200 ലേഖനങ്ങൾ വന്നു. മൂന്നാം വിശ്വഹിന്ദി സമ്മേളനത്തിൽ 55 ലോകഗ്രന്ഥകാരന്മാരോടൊപ്പം ആദരിച്ചു. 250ൽപ്പരം സമ്മേളനങ്ങളിൽ അദ്ധ്യക്ഷനോ ഉദ്ഘാടകനോ ആയിട്ടുണ്ട്. ചിത്രപ്രദർശനം (വൺമാൻഷോ) തിരു വനന്തപുരത്തും ദില്ലിയിലും നടന്നു. ദില്ലിയിൽ ഉദ്ഘാടനം ചെയ്തത് ഡോ.കരൺസിംഗ്.
പ്രസാധകർ:
യവനിക പബ്ലിക്കേഷൻ & ഡിസ്ട്രിബ്യൂഷൻ ട്രസ്റ്റ്
കരമന-തിരുവനന്തപുരം 695002
ഫോൺ: 0471-2913016, 9249597080

श्री अक्षरगीता
(चौदहवां अध्याय)

डॉ.वीरेन्द्रशर्मा

श्रीभगवान बोले-

पुनः कहूँगा परम ज्ञान मैं
ज्ञान में अति उत्तम को
परमसिद्धि पा गए सभी मुनि
हो भवमुक्त जान जिसको

जो मेरा साधर्म्य पा गए
इसी ज्ञान का ले आश्रय
जन्म न लेते महासर्ग में
व्याकुल करती नहीं प्रलय

मेरी योनि प्रकृतिरूपा है
जिसमें गर्भ धरा करता
सभी प्राणियों का ही जिससे
अर्जुन, है उद्भव होता

समुद्भूत तन जितने भी हैं
अर्जुन, सर्वयोनि में ही
जननी उनकी मूल प्रकृति है
पिता ब्रीजप्रद हूं मैं ही

रज तम सत्व तीन गुण
प्रकृतिजन्य इन तीनों को
पार्थ सभी बांधा करते वे
तन में अव्यय देही को

निर्विकार गुण सत्व प्रकाशक
उन सब में निर्मल होता
ज्ञान तथा सुख की संगति से
अनघ, वही बांधा करता

काम तथा आसक्ति जन्य जो
रागरूप गुण रज जानो
कर्म संग से बांधा करता
पार्थ वही ऐसा मानो

जानो तम अज्ञान जन्य तम
अर्जुन मोहे जो सबको
निद्रा आलस तथा भ्रान्ति से
बांधा करता है सबको

सुख में सत्व, कर्म में गुण रज
लगा, विजित जन को करता
आवृत करके ज्ञान, पार्थ, तम
जन में आलस भर देता

रज तम दबा सत्व बढ़ता है
दबा सत्व तम, रज बढ़ता
दबा सत्व रज पार्थ तथा है
वैसे ही है तम बढ़ता

इस शरीर में सब द्वारों को
आलोकित जब जब जानो
ज्ञान तथा बिद्या से तब तब
बढ़ा सत्वगुण यह मानो

होता लोभ, प्रवृत्ति होती है
कर्मारम्भ तथा होता
चंचलता लालसा पनपती
अर्जुन, जब रज बढ़ जाता

तम के बढ़ जाने पर अर्जुन
मोहवृत्ति बढ जाती है
अप्रकाश हो जाता एवं
अप्रवृत्ति हो जाती है.

सत्ववृद्धि होने पर प्राणी
देहत्याग है जब करता
उत्तमवेताओं के निर्मल
लोकों को है वह पाता

रजोवृद्धि में लीन हुआ जन
मानवयोति जन्म लेता
तमोवृद्धि में देह त्यागकर
मूढ़योनियां है पाता

श्रेष्ठ कर्म का कहा गया है
होता सात्विक फल निर्मल
राजस का फल होता दुःख है
वृत्ति मूढ़ता तामस-फल

ज्ञान सत्वगुण से होता है
होता लोभ रजोगुण से
मोह प्रमाद मूढ़ता एवं
होते सभी तमोगुण से

सत्वगुणी जाते हैं ऊपर
मध्य लोक में राजस हैं
नित्य तमोगुण वृत्ति लीन जन
पाते सभी अधोगति है

नहीं गुणों से अनय किसी में
दृष्टा देखे कर्तृ-स्वरूप
गुण से परे तत्व जाने जब
पा लेता वह मेरा रूप

उल्लंघन कर तीन गुणों का
देह सृजन जिससे होता
जन्म मृत्यु वृद्धत्व व्याधि से
मुक्त पुरुष अमृत पाता

अर्जुन बोले-

त्रिगुणातीत पुरुष के लक्षण
होते हैं क्या हे भगवन!
क्या आचार तथा केसे हो
गुण तीनों का उल्लंघन

श्रीभगवान बोले-

जब प्रकाश एवं प्रवृत्ति भी
मोह प्रवृत्त अर्जुन होते
द्वेष न करता, तथा न इच्छा
जब निवृत्त वे हो जाते

उदासीन की भांति अवस्थित
विचलित नहीं गुणों से हो
गुण ही गुम व्यवहार कर रहे-
भावस्थित जो अविचल हो

लोष्ट, उपल, कंचन में सम जो
स्वस्थ भाव सुख दुःख में हो
अपनी निंदा स्तुति में सम
तुल्य शुभाशुभ जिसको हो

मान तथा अपमान जिसे सम
मित्र शत्रु हों सम जिसको
कर्मारम्भ-परित्यागी जो
गुणातीत कहते उसको

पूर्ण समर्पण भक्तियोग से
करता जो मेरा पूजन
गुण तीनों का उल्लंघन कर
होता ब्रह्मप्राप्ति-भाजन

अव्यय एवं अमृत की मैं
निश्चय ब्रह्म प्रतिष्ठा हूं
आश्रय धर्म सनातन का हूं
ऐकान्तिक सुख का भी हूं ●

खुद अपना उद्दार करो तुम

प्रो.सी.वी.सतिवास्तव, विदग्ध, रामपुर, जबलपुर, म.प्र.

जहाँ जहाँ जितना संभव हो, हर प्राणी से प्यार करो तुम।
अपने सदाचार, सद्गुण से खुद अपना उद्दार करो तुम।।

जग की रीति, चलन सब अटपट कोई किसी का नहीं सहारा
मीठी बातें तो करते हैं पर मन में सबके अँधयारा।
त्याग निराशा और उदासी जीवन में उल्लास भरो तुम।।[1]

वही राह में रुक जाता है जो खुद ही मन से है हारा।
वही डूब जाता सागर में जिसको दिखता दूर किनारा।।
अपनी नाँव स्वतः खेने का मन में खुद विश्वास भरो तुम।।।[2]

कुछ भी नहीं कठिन कर पाना यदि सँग है विश्वास तुम्हारा।
सुदृढ़ चहातों से टकर का हर तूफान स्वयं है हारा।।
चट्टानी साहस बटोरने का नियमित अभ्यास करो तुम।।।[3]

भला-बुरा कुछ भी न कहीं कुछ सबका है संसार निराला।
उसे वही लगता है अच्छा जिसने जो भी मन में पाला।।
सबसे रह निरपेक्ष, हमेशा संतृप्ति का आभार करो तुम।।।[4] ●

सिकन्दराबाद, उत्तरप्रदेश की सभा में श्री.ओ.पी.एस.मलिक (आई.पी.एस.) श्रीमती रजनी सिंह जी को पुरस्कार देते हैं.।

अंतर्राष्ट्रीय आर्यमहासम्मेलन, दिल्ली-२०१२ के प्रमुख मंच पर विख्यात वैदिक डॉ.सुन्दरलाल कथूरिया जी के ग्रंथ न्याय दर्शन की मान्यताएँ का विमोचन

डॉ.एन.पी. कुट्टनपिल्लै प्रख्यात मलयाली हिन्दी साहित्यकार, जो हैदराबाद में स्थाई रूप से पोफसरी करते हुए रहे थे। हाल में उनका स्वर्गवास हुआ।

कादम्बरी का सवमी प्रज्ञानंद प्रज्ञाश्री सम्मान उमाशंकर मिश्र को

हिन्दी विभाग रेवेंशाँ विश्वविद्यालय, कटक, ओड़िशा एवं भारतीय सांस्कृतिक संबन्ध परिषद्, नई दिल्ली द्वारा कटक में आयोजित भारतीय भाषाओं में रामकथा विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी के अध्यक्ष डॉ.बालशौरि रेड्डी तथा वक्ता गण सुश्री देविका, डॉ.एस.तंकमणि अम्मा, डॉ.अंजना संधीर तथा डा.सुषमा सिंह।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायरजी की नवति आदरित की ३-१-२०१३ शाम को सत्यन मेमोरियल भवन में, यवनिका प्रकाशक की ओर से प्रसाद खिला रहे हैं शिष्यवर जस्टिस एम.आर.हरिहरन नायरजी।

डॉ. नायरजी के नवति-आदर के सिलसिले में प्रिय शिष्या डॉ.एस. तंकमणि अम्मा गुरुजी को अंगवस्त्र पहनाकर समादर करती है।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के ३२वाँ वार्षिक स्मेलन के अवसर पर संपन्न देशीय सम्मेलन का उद्घाटन उत्तरप्रदेश को प्रख्यात कवयित्री श्रीमती रजनी सिंहजी करती हैं। पास खडी है संचालिका डॉ.उषाकुमारी, डॉ.नायर, डॉ.तंकमणिअम्मा, हिमालयप्रदेश से आर्य डॉ.प्रत्यूषगुलेरी (ख्यातिप्राप्त साहित्यकार), विजया बेंक के मुख्य प्रबंधक श्री.केशवनजी

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर द्वारा विरचित केरल के हिन्दी साहित्य की बृहद् इतिहास की एक प्रति रेवेंशाँ विश्वविद्यालय, कटक, ओड़िशा की कुलसचिव एवं विभागाध्यक्ष प्रो.डॉ.स्मरप्रिया मिश्र को सौंप रही हैं प्रो.डॉ.एस.तंकमणिअम्मा, श्री.अरुणाकुमार उपाध्याय, उपनिदेशक, पुलिस, कटक।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के ३२वाँ वार्षिक सम्मेलन में उपस्थित विशेष आयोजक।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के लिए शोध-पत्रिका डा.एन. चन्द्रशेखरन नायर, श्री निकेतन, तिरुवनन्तपुरम - ४
द्वारा मुद्रित संपादित और श्रीरामदासमिशन प्रिंटिंग एण्ड पब्लिशिंग हाऊस, तिरुवनन्तपुरम-८७ में मुद्रित।